

मन्त्र

वैद्यविजोद (माषा)

संज्ञ मन्त्रिमाजीकुतः

Acc. No. 51124

Acc. No.

51124

दोः सुविधितुकी मोचरस अज मोदा सम ५ पीसिवाले पी जाये अती सारन सिजाइ ३० इति लघुग
गाध रचूर्ण दोहा आब बी म अरु जाइ फल व ड रु ह आ फू घालि जल में ले पौ नाभि पर अती सार को
ताल ३८ श्लोक सौ वीर पिष्टः सहकार के लो नाभिः प्रलेपादति सार हंता इति अती सार को लेप दोः
मो घाविल्व अरु मोचरस लो द द्रव्य वधा व गुड सों गोली बांधिये अती सार सब जाव इति गुटिका
इति अती सार विकित्सा समा अथ ग्रहणी विकित्सा दोहा चित्र काहे गु अज मो च व कणामू
लक्ष्मर लवल पंच त्रिकुटा सकल चूर्ण एह समधार ४० गुटिका दाडि मरु स सहित पुनि बिजौर रस
लेइ ग्रहणी पावन भूष मंदइ है जानि कै देइ ४१ इति चित्रक गुटिका दोः नागर मोय पती सस सुकु
उष्णाल अरु वेल पावा क रू अरु धात की यह समाना करि भेलि ४२ तद्रुल जल अरु मधु सहित ग्रह
णी रक्त की दोइ अर्श मूल गुद प्रवाहिका हरै के र र जोइ ४३ इति नागर चूर्ण दोः जाती फल चित्रक
हरउ द सुति विउंग ताली सदल उपरु चित्रक पी पलि मरि च ल वग ४४ लोचन वंश द सुधर

२७ ये दो० कहेइ नमादि अतीसार के रोग स^{प्र} ज्वराति सार को दोनु जोग कहे वेद्य यद^द कोष
२८ इति कलिगादि काय दो० ^{बाल्य} बाल विल्व ^ग अति स^{प्र} चरिता मे गुड सम देहि आम शूल विबन्ध के रक्ताति
सार को लेहि २९ पुनः दो० लोद ^{मुन} मुर हठी सो चर स आब गूठली पाइ माजू फल दाडि ^{अनारफल} मंजुली मरिच म-
स्तकी धाइ ३० वंश नयन गुजरात को माई की कोर मूल कुडा बाल अरु जाइ फल ली जै ए सम तूल ३१
तामहि कथ दोइ अंश धरि अरु पेवे के बीज ता का गिरि त्रय भाग ले चूरण सुक शुकी ज ३२ कर दुगोटिका
पोस्त जल टंक एक परवान तंडुल ^{वेसलो वन} ल सो पी जीये स^{प्र} सार है रान ३३ अथ वा देइ उट न^{प्र} गंगा को पर
वाह तै से वेग अति सार को ता को रो कै राह ३४ इति लीलावती बटी दो० तंडुल पल इक अ^{प्र} अठगुंभ
जल महि मेइ घडी दोइ रा घोष बैत बपी बन के देइ ३५ इति तावल पनी मर्यादा अथ गंगा धर चूर्ण दोहा
अरु लू सो ^ग पाशु वा विल्व लोद लजानु पती स आब बीज अरु सो चर स कुडा बाल सम पी स ३६ लोचन
वाला इइ यव पी सि बाणि मधु पाइ तंडुल जल भोजन ^ग अती सार सब जाइ ३६ इति दृष्ट गंगा धर चूर्ण

इति तत्र दुर्वाः ॥ ओं या ओ य धीः पूर्वो जाता देवः ॥ अग्निपुंगुं पुरा मनेनुज भूषणं सुहृत् शतं धां साति
 संच ॥ इत्यो य धीः ॥ ओं हिरण्यगर्भः समवर्तता ये भूतस्य जातः ॥ परिरैकासी तस्य दधार पृथिवी
 यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेमः ॥ इति तत्र दुर्वा ॥ ओं अश्वत्थे वो नित्यं पार्श्वो वीजसति
 कृता गोभाज इत्किं ता स य यत्स न च य वृक्षस्य ॥ इत्यश्वत्थं पञ्चमः ॥ ओं अणाय स्वाहा ॥ आपाना
 य स्वाहा ॥ व्यानाय स्वाहा ॥ ओं नेत्रं चैकेऽवालिके नेत्रं न पतिकं श्यनं सस्यं श्वेकः सुभद्रिकां को
 पीत्त वासिनी ॥ इति तत्रा म्रपत्तं नमः ॥ ओं धान्यं मे सिंधिनुदिदेवा न्द्राणाय त्वो दानाय ॥ आना
 यत्वा दीर्घा मनुश्रसिति मायये धां देवो जः स चित्ता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णत्वा हि देवा पा
 ना चतुयो ॥ त्वामदीनां पयोसि ॥ इति ध्यानं ॥ कलशोपरि स्थापनम् ॥ पात्रोत्तरे ॥ ओं अग्निर्ज्यो
 तिर्ज्योतिराग्निः स्वाहा ॥ सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ अग्निर्ज्योतिर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः ज्यो

ना० ४८

अथ अजिप्रतिमास्थापनादिकम् ॥ रौप्यमयी अक्षताः प्रथमा ॥ सुवर्णमयी विष्णोर्द्वितीया ॥ ताम्रमयी रुद्रः तृतीया ॥ लोहमयी यमस्य चतुर्थी ॥ ५ ॥ सीसमयी अंतस्पर्शे चमीतिः ततस्ताः प्रतिमाः मनोज्ञैति रिति संज्ञेण प्रतिष्ठाप्य पृथक् पृथक् कृत्वा जेयुनिधाय ॥ पुरुषसूक्ते न पूजयेत् ॥ तत्रेण वा ॥ पुरुषसूक्ते च ॥ ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ स भूमिं सर्वतस्त्यक्त्वाऽत्यतिहृद्दंशुत् ॥ मित्वा बहूनाम् ॥ पुरुष एवेदं सर्वं यद्रूपं तं यच्च भाव्यं उत्तामृतं च स्ये शान्तो यदनेनातिरोहति ॥ २ ॥ आसने एतावानस्य महिमा तो जपो योऽष्टा पुरुषपादोऽस्य विष्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥ पादौ ॥ त्रिपादुर्ध्वः उदैत् पुरुषः पादोऽस्येह भवत्पुनः ॥ ततो विष्णुं व्यक्रामत्सा शान्तान्शाने अभिः ॥ ४ ॥ इत्यर्थम् ॥ ततो विराडजायत चिराजोऽधिपुरुषः स जातो अत्यरिच्यत पृथग् ॥ इति मथो पुरः ॥ इत्याचमने ॥ ५ ॥ तस्माद्यज्ञात्त

देमप्यमानेमहोदधौ उत्पन्नोसितदाकुं ॥ अथतोविष्णुनास्त्रये ॥ ततोयेसर्वेतीर्थास्तदेवः
सर्वेत्त्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिहेतिभूतादीन्त्वयिप्राणंप्रतिहेति ॥ शिवःस्त्रयेत्त्रयेत्त्वमेवा
सिचिष्णुस्त्वंचप्रजापतिः ॥ आदित्यावसमोरुद्राःविश्वेदेवामरुद्राः ॥ त्वयितिहेतिस
र्वेपियत्तकामफलप्रदः ॥ त्वत्प्रसादादिमयेज्ञंकर्तुमेहजलोद्भव ॥ सात्तिध्वंकुरुमेदेव
प्रसन्नोभवसर्वदा ॥ इतिकलशस्यापयेत् ॥ ततःसंकल्पंकल्पा ॥ कलशस्यापत्येवान्याद्याः
भिःपूजयेत् ॥ इतिकलशस्यापत्तविधिः ॥ ततो गोदानार्थेविप्रवचरणादिकंकल्पा ॥ येतत्स
दद्यामुक्कगोजस्यामुक्कयेतस्यदेहोद्धारणार्थमुक्तिकामः ॥ इमांशंसर्वत्मारुद्रदेवत्वात्सर्गांशं
जीरौप्पखुरीतामपरांशंकोस्पदोहिनींघंटाभरणचामरादिभूषिताममुक्कगोजायामुक्क
शम्भोर्वास्यायत्तुभ्यमहंसेप्रदये ॥ इतिसंकल्पगोदद्यात् ॥ ततःसुवर्णप्रतिष्ठादद्यात्

पुरुषेण रुचिं दद्यात् नमस्तनुत ॥ वसंतोऽस्यासीदं ज्योतीषः इधमः शरद्वि ॥ १४ ॥ नमस्का
 रः ॥ सप्तास्यासत्परिधरास्त्रिः सप्तसमिधः कृताः देवाय घञ्जत न्वाना अजधन्त न्युरुषे पशुमं
 घटहिणा ॥ यज्ञेन यमः ॥ जन्त देवास्तानि धर्माणिः प्रथमान्यासन्ते हताकं महिमातः स जेत
 यज्ञं पूर्वमाहुः संति देवाः ॥ १५ ॥ उद्दासतम् ॥ तदुक्ते सौवर्गो कारयेद्विष्णुं ब्रह्माणोरौष्यकं ॥ तथार
 द्रेताममयं कुर्यात् ॥ यमलोहमथ तथा प्रेतः सीसमयं कृत्वा प्रतिमां स्थापयेत्तयेति ॥ पुनः
 संकल्पः ॥ ओं अष्टेत्यादि देशकालादिकं स्मृत्वा मुकगोत्रस्यामुकप्रेतस्य दुर्मरणाजन्तयो
 यनाशार्थमौर्ध्वदैहिके संप्रदानं त्रयोपतामिद्विषयं कर्तव्यं नारायणवत्स्येण भूतब्रह्म
 विष्णुरुद्रयमप्रेतप्रतिमाः ॥ स्वस्वमेतैर्यथा लब्धोपचारैरहमर्चयेत् ॥ इति संकल्पयेत्
 ततो जलप्रतिमोरौष्यममयी ॥ ओं युक्तेन राज्ञे सौवर्ग्ये देवस्य सवितुः ॥ सर्वे स्वर्ग्या यशस्तपाः

स्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभते पयया ज्येष्ठे ॥ १ ॥ अजमेवाय ज्यानारण्या ग्राम्याश्रये ॥ इति स्तु-
तेम् तस्माद्यज्ञात्तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः अजः समानियन्तिरे ॥ २ ॥ दाधे सियन्तिरे तस्माद्यजु-
तस्माद्यजायतः ॥ ३ ॥ इति वस्त्रं ॥ तस्मादपवा अजायेत ये केचो भयादतः गावो हयान्तिरे तस्मा-
तस्माज्जाता अजावयः ॥ इति यज्ञोपवीतं ॥ ते यज्ञे च हि धियो आह न्युरुष्य जातमनः ते न देवा-
अयजेत सां धर्मा अयय प्रमये ॥ ४ ॥ इति गंधम् ॥ यत्पुरुषं वपदधुः कतिधा व्यकल्पयन्मुखं कि-
मस्यासीत्किंचाहु किमरूपादा उच्यते ॥ ५ ॥ पुष्पम् आहणोत्पुष्पमासीद्वाहुराजस्यः कृत उ-
रुतदस्य यद्दृश्यः पञ्चोऽंशे परद्रो अजायत ॥ ६ ॥ इति धूपम् ॥ चंद्रमामनसो जातश्चक्षुः सूर्यो-
अजायत ॥ श्रोत्रा अक्षयुश्च श्राणश्च मुखं दग्धिरजायत ॥ ७ ॥ दीपम् ॥ नाभ्या आसीदंतरित्त-
थे श्री ह्यो धोः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा तथा लोको अकल्पयतः ॥ ८ ॥ तैवेष्टम् यंत

स्तव्यावर्गो न ह रिता जिह्वा लाला प्रमुचति ॥ ४४ ॥ पित्तकोपेत्तुरक्ताभा तित्तादुग्धेव जायते ॥ जि
ह्वा हाहान्विता जिह्वा स्फुलागुर्वी विलापिनी ॥ ४५ ॥ सुस्पृलकंठकोपेताक्षारा बहुकफा
वहा ॥ दोषद्वये द्विदोषोक्तलक्षणा रसना भवेत् ॥ ४६ ॥ सर्वजिह्वा त्रिदोषे स्याद्विलक्षिताने
कलक्षणा ॥ ४७ ॥ इति जिह्वा परीक्षा समाप्तम् ॥

छूटी लज्जा देह की ताकौ जानहु नाश ॥ १० ॥ ग्रीवा हृदय ललाट मुख से दशी तत न होई ॥
जानै न आप शरीर को मृत्यु होई न रसोई ॥ ११ ॥ आभा गोमय वर्ण की शीश लप तत न जा स ॥
अथ वाचिक धर्म शिर मरण माय मै ता स ॥ १२ ॥ हरित वर्ण जा की शिरारो म कूप मिलि जा
ई ॥ अम्ला भिलाषी पुरुष सो मरण पित्त सैं पाई ॥ १३ ॥ विनान मित्त गुरु तार है अथवा लघु
ता देह ॥ रक्त अथै मुख नासिका कहि असांध्य है एह ॥ १४ ॥ कृष्ण जीभ अरु लिप्त मुख नाम

अक्षवैहीन॥ वात कहै अक्षरतुटै सोयमसेतीलीन॥ १५॥ तनकी सुधि जाके नही शीतलस
 कलशरीर॥ हृदयतप्तमुखस्वास अतीसोयमराजातीर॥ १६॥ रोमशियल अरु लालचनु
 हृदयप्रल अतिहोई॥ अधिकस्वासमुखतेंचलै सोनरजीवैकोई॥ १७॥ तृवाश्वासहिध्यान
 युगतकाठसरूपीदेह॥ फिरेनेत्र अरुश्वासमुखसोजावैयमगेह॥ १८॥ प्रभाघटैसबदे
 हकीसकतिवचनकीनाहि॥ अंतरजाकेचररहैसोयमकेघरमाहि॥ १९॥ सरजऊगै
 वेदनाजाकेतनपरस्वेद॥ कंठैघुर्घुरकफकरैताकीनाहिउमेद॥ २०॥ कर्णवधिरसे
 धानप्रलयलालपसीनाजास॥ उठतैंहीगरिजाइतनयमपुरताकौवाय॥ २१॥ इतिअसा
 ध्यलक्षणकालज्ञानसमाप्त॥ अथनक्षत्रनिर्णय अरिष्टकथन॥ ज्योतिषचक्रविवा
 रकरिआदिनिष्ठादेई॥ कहीतयोददशरात्रिकीमरैकिजीवैकेई॥ २२॥ वारहदिन॥

अरु रात्रि षट्शतभिषाह प्रमान ॥ तैसैं पूर्व भाद्रपद मरण शीघ्र वै जान ॥ २३ ॥ उत्तर चवद
ह दिन कहत रेवती कह दिन चार ॥ अथ कहिये आठ दिन मरण कहै निरधार ॥ २४ ॥ अ
श्वनी दिन षट्शत जानिये भराणी पंच वषान ॥ सात दिवस कृत्तिका कहि बीस एक परमान
२५ ॥ तीन पक्ष सें शाय रहै जानै गुनि जन भेद ॥ कै जीवै कै मोक्ष होई ताकी नाहि उमैद ॥ २६ ॥
रोहणी एकादश दिवस और आठ परमान ॥ नव दिन मृगशिरा जानिये पुनि षट्शत त्रि
वषान ॥ २७ ॥ दिवस पंच आद्रा कह्यो तामै मृत्यु जु होई ॥ अथ वा सें शाय जानिये पक्ष तीन
मैं जोई ॥ २८ ॥ पुनर्वसु जाको ज्वर चढै बीस सात परमान ॥ ते रह दिन में छोडिये अथ
वामरै निदान ॥ २९ ॥ सप्त रात्रि ज्वर पुष्प में ॥ अरु वर्ति जो होई ॥ मृत्यु प्रेत्या मैं कह्यो परै
न जीवै कोई ॥ ३० ॥ मघा द्वादश जानिये छूटि जाई दिन माहि ॥ पाते ऊपरि दिन बढै तो जीव

नकोंचाहि॥३१॥दिनदशपूर्वाफाल्गुनीउत्तरनवकेअष्ट॥अथवाविंशतिएकदिनऊपरि
 होईनकष्ट॥३२॥हस्तअष्टमिदिनसप्तमनिदिवसआठकहुचित्र॥दिनदशछूटैस्वातिमें
 अष्टमीनपुनिसित्र॥३३॥दिनईकईसवैशाखधरिदिवसआठअनुराध॥घोरज्वरजा
 कोरहैनाहिचिकित्साबाध॥३४॥ज्येष्ठापंचममृत्युभनिअरुदिनवारहजोई॥भूलराविद
 शजानियेवीसाएकसुखहोई॥३५॥नवदिनपूर्वाषाढकेऔरउत्तराषाढ॥मासआठपुनि
 मासनवकह्योगुनीजनपाठ॥३६॥अवणकहेहेआठदिनकहीमर्यादसवएह॥छूटैम
 रैडूनवीचमेंसमझिऔषधीएह॥३७॥यहविचारकरिमुद्धमतिनीजो जसजगमाही॥
 धर्मअर्थदोउसधैंकीयेपापसवजाहि॥३८॥इतिनक्षत्रनिर्णयः॥अथमूत्रपरीक्षा॥अरु
 शानीनरुखेअनिलउष्मपीतपित्तहोई॥स्निग्धशीतघनमूत्रसितश्लेष्मकह्योवैसाई

मिश्र मिलै तो हं द कह कहौ कृष्ण सन्निपात ॥ बुद्धि वें ते सो जानि लै देखि वर्ण अरु धात ॥ ४० ॥
धारा पहिली छाडि दे कोश पात्र महि धार ॥ तन क धूप राखै पछै तैल वृंद की डार ॥ ४१ ॥ विंदु
न पसरै मूत्र में वह असाध्य है जोई ॥ तैल विंदु बुडै जहो कहै मरण सब कोई ॥ ४२ ॥ जाहि अ
जीरण रस सरस बंध होई मल जाय ॥ ताहो वृंद पसरै नही सो नरक कष्ट प्रकार ॥ ४३ ॥ अथ
विंदु लछन दोहा ॥ चामर छत्र पताक घर हंस जु हस्ति सरोज ॥ हय वृष बै आकार शुभ
दीर्घ दृष्टि करि योज ॥ ४४ ॥ अथ निषिद्ध दोहा ॥ कछ पहल प्रंगाल खर का क उष्ट्र अरु साप
गृह गोधा आकार जह इन तै भाजो आप ॥ ४५ ॥ मूत्र अजा भा जानिये कुं कुम सम है जाई ता
को कहिये पित्त वह औषध करि मन लाय ॥ ४६ ॥ प्रभा कूप जल तुल्य भनि कहौ ताही सम
धात ॥ दोष विचारै वैद्य तव पीछे औषध बात ॥ ४७ ॥ इति मूत्र परीक्षा ॥ अथ दूत लछन क

वै०
६

यने दोहा ॥ अपनी जातिके दूत शुभ और जाति शुभ नाहि ॥ सुंदर मूरति कल वचन शुभ
 लछन तन माहि ॥ ४७ ॥ दीन वचन भनि वैद्य को चले वेगति होई ॥ मलिन वस्त्र जके तन
 हि शुभ कहै सब कोई ॥ ४८ ॥ नगन शीश अरु व्याधत न रक्त वस्त्र जटाधार ॥ दूत बलावन
 वैद्य को कदे न जावै लार ॥ ४९ ॥ छूटे केश ईधन मगन कुज्वर जक कषाय ॥ भूषा बंध्यायो
 धिता सिद्ध न देखे पाय ॥ ५० ॥ पुनः ॥ शस्त्र देड अरु षेड जन देखे मुडित होई ॥ विधवा तिय
 अरु पति व्रता साय न ले जो कोय ॥ ५१ ॥ इति शुभा शुभ दूत लछन ॥ अथ रोग लछन दोहा
 वर्ण प्रकृति सों जो मिलै धीर्य वंत है सोई ॥ और यत्ते द्रिय वैद्य वस चिकित्सा ना की होई
 ५२ ॥ अथ वात प्रकृति कथने ॥ अल्प केश कृश रूदन र मन चंचल वाचाल ॥ फिरे व्याम
 ओ स्वप्न में वात प्रकृति की छाल ॥ ५३ ॥ अथ पित्त प्रकृति लछन ॥ तरुण सभें कुच सेत वैव

रामः
६

द्विर्वत्तपरस्वेद॥ ग्रहगणदेसैस्वप्नभंक्रोधपित्तभनिभेद॥ ५४॥ अथ कफप्रकृतिलछन दोहा
जाकी बुद्धिगंभीर अति स्थूल अंग वल वत्त॥ रसि गंध केश जल स्वप्न मंधोर ज प्रलेख कहें
त॥ ५५॥ इति वात पित्त कफ लछन॥ अथ वात पित्त कफ मास कथन दोहा॥ भद्रौ श्रावण
इति गिरि माह पौष आषाढ॥ वायुराज षट्मास कहौ पंडितो पाठ॥ ५६॥ अथ पित्त सासक
नाने दोहा॥ आसू कार्तिक ज्येष्ठ त्रय चतुर मे लि वैशाख॥ पित्तराज पंडित कहौ पण्डित॥ य
निकी साय॥ ५७॥ अथ कफ मास कथन दोहा॥ मास दोई कफ राज कहौ फागुन चैत वसा
न॥ कहें जु वारह मास जानहु चतुर सुजान॥ ५८॥ इति मास॥ अथ वात कोप कथन दोहा
रूक्षतिक्त कषाय कटु जागर अमति य संग॥ मल मूत्र रो कै जल तरै करै सवन सो जग॥ ५९॥
श्यामा कंगुनी वार कहौ अरु अजीर्ण उपवास॥ सेवै श्रावण भाद्र वैवाय को प कै जास॥ ६०॥

वै०
७

अथ वायु उपाय कथन दोहा ॥ स्निग्ध उष्ण वल्न वेतर सपुष्ट सात्त्व उवास ॥ स्नान तैल मर्दन कि
ये होत पवन कानाश ॥ ६१ ॥ स्वादु अम्ल आतप अगनि तैल मांस सुरापान ॥ स्नेह से ॥ भोजन
निरुह मेडन मर्दन जान ॥ ६२ ॥ उष्ण पान अरु तपन विधि पानाहार विहार ॥ इन तै वायु प्रसा
त मुख पेडित कहो विचार ॥ ६३ ॥ अथ पित्त कोष कथन दोहा ॥ तीक्ष्ण गरम अरु अम्ल कटु आ
तिपति स उपवास ॥ क्रोध लवण तिल दधिसुरा अलसी को जी भास ॥ ६४ ॥ भोजन अधिव ॥
अरै शरदिग्नीष्म के मास ॥ अर्द्ध रात्रि मध्याह्न दिन पित्त कोष परकास ॥ ६५ ॥ अथ पित्त कोष
कथन दोहा ॥ तिक्त स्वादु कषाय सवपीत वमन तरु छाया ॥ वारियंत्र अरु त्रिपत्य शमूह च
दन लाय ॥ ६६ ॥ निशाचोदनी अरु बीजना सर्पिंदोर रक्त साव ॥ रेत से क अरु लेप तन पित्त
शोत्रिके भाव ॥ ६७ ॥ अथ श्लेष्म कोष कथन दोहा ॥ गुरु मधुर अति शीत दधि जया अन्न पत्रपा

सप्तः

७

रमेति॥ ज्वरात्तीरकोपेभयहतुरतदिवावेरेति॥ २८॥ चौपाई॥ गोचुरपीपलिधनीयालेह॥ पृथ
 वित्वअजंवाइनेदेहि॥ देवदारुअरुइंद्रयवलीजे॥ गजपीपलिसमकदुकीदीजे॥ २९॥
 दोहा॥ प्रुंठीधातुकीमोचरसअजमोदासमभाई॥ पीसिछाछसौपीजियैअतीसारनशिजाई॥ ३०॥
 इतिलघुगंगाधरचूर्णदोहा॥ आववीजअरुजाइफलवडरुहआफुघालि॥ जलसौलेपे
 नाभिपरअतीसारकोंटालि॥ ३१॥ प्रुनोकः॥ सौवीरपिष्टःसहकारकल्कोनाभिःप्रलेपादति।
 सारहेता॥ ३२॥ इतिअतीसारकोंलेपःदोहा॥ मोषावित्वअरुमोचरसलोदइंद्रयवधाव
 गुडसोंगोलीवांधियेअतीसारसवजाव॥ ३३॥ इतिगुटिका॥ इतिअतीसारचिकित्सास
 माप्तम्॥ अथग्रहणीचिकित्सादोहा॥ चित्रहिंगुअजमोदवचकणामूलठह्वारल
 वनपंचत्रिकुटासकलचूर्णएहसमधार॥ ३४॥ गुटिकादाडिमरससहितपुनिविजो

वै०
३६

ररसलेई॥ ग्रहणी पाचन भूषमं दइ नै जा नि कर देई॥ ३३॥ इति चित्रक गुटिका दोहा॥ नागर
मोथ पत्ती ससम कुडा छाल अरु वेल॥ पाठा कइ अरु धात की यह समाश करि भेलि॥ ३४॥ तंडुल
जल अरु मधु सहित ग्रहणी रक्त की होई॥ अशु प्लुत गुद प्रवाहिका हरै जोगा जोई॥ ३५॥ इ
ति नागर चूरण दोहा॥ जाती फल चित्रक हरड चंदन अंठी विडंग॥ ताली सदल उपकुं चि
का पीपलि मरिच लवंग॥ ३६॥ लोचन वंश कपूर धर अक्ष समान सम भेलि॥ चातुर्जात क
सप्तपल सिता सर्व सम देय॥ ३७॥ यह चूरण क्षय काश कों स्वास अरोच करोग॥ ग्रहणी अरु
अतीसार कों अगनि मोद्य कों जोग॥ ३८॥ उपजै कफ अरु वात कों पीनस अरु प्रतिश्याय॥ कु
छ दोष सब एक हे स वैदूरि कै जाय॥ ३९॥ तक्राही लघु दीपनी त्रिदोष शमनी राह गव्य
तक्र निस्नेह शुभ ग्रहणी रोग कों नै ह॥ ४०॥ इति ग्रहणी चूरण॥ अथ कपित्थाष्टक चूरण

लेय

रसः
३६

कवित्त॥ चित्रक अनारदाने श्रुंठीले दविल्वगिरितितिडीजवानी दोष्यधावे फूलली जीये॥ सो
चरमरिचं चित्रात जंदल त्रुटिना गके सरधने यजीराने त्रमालमी जीये॥ त्रिगुण औषधमे लि
रसगुण सितारे लिषट्गुण कौवभेलि चूरा करी जीये॥ अतीसारखा सकाश अरुचिग्रहणी
हिका गलगदक्षयी गुल्म इन कौहरी जीये॥ ४१॥ दोहा॥ कपित्थावक नाम यह सारंग धरतें आ
न॥ देजो समजि विचारिय हरी गन कौ पहिचान॥ ४२॥ इति कपित्थावक चूर्ण॥ अथ दाडिमाव
क चूर्ण चौपाई॥ अठपल लीजे दाडिम बीज॥ इक पल मे लि सुगंध कलीज॥ लोचनवाला अ
रुने त्रमाल॥ कर्ष कर्ष औषध सब डाल॥ अठपल बीच सितामहि धरौ॥ जीराधनिया पल इ
क करौ॥ ग्रंथिक त्रिकुटा पल पल भाग॥ कीजे चूरा शास्त्र के माग॥ ४३॥ पार्श्व फूल अरु हट्टै
कारोग॥ ग्रहणी अरुचि गुल्म कौ जोग॥ मेद अगनि अरु जा कौ कास॥ करै दूरि दाडिमावक

रास॥४४॥ इति दाडिमाष्टकचूर्णं॥ अथ रसरन्नसमुच्चयात्तदोहा॥ त्रिकुटाटंकणसूतवि
षगंधकशुद्धजुलेई॥ तामें कौडाभस्मकरिरसजंवीरीदेई॥४५॥ मर्दनकीजै एकदिनरसकों
छाहसुकाई॥ यावणमात्राषट्हरती घृतअरुमरिचमिलाई॥४६॥ ग्रहणीदीजै लेहयह ऊ
परिपीजै तक्र॥ तुरतगवावैरोगकोंजै सें अरिहरिचक्र॥४७॥ इति ग्रहणीरसः दोहा॥ एला
तजतमालपंचत्रिकुटाजीरेदोई॥ दाडिमतिंतिडीमेलिसमसित्तचौगुनीहोई॥४८॥ दी
पनपाचनचूर्णशुभरुचिकरराजाजोग॥ तीनदोषग्रहणीअरसअतीसारहररोग॥४९॥
इति त्रिसुगंधादिचूर्णं॥ अथ गुटिकादोहा॥ त्रिकुटाचित्रकचवकसमतीनंलूनयव
वार॥ स्वेतजीरपीपलिजटासौचरदाडिमधार॥५०॥ सवसमऔषधआनिकैरसअना
रपुद्देह॥ अक्षमानगुटिकाकरहुवातकफमयलेह॥५१॥ स्वासकासग्रहणीप्रवत्सजा

हि अरोचक होई ॥ भूषप्रवल दीप जपचन इन समनाहिन कोई ॥ ५२ ॥ इति दीपन पाचन ॥
गुटिका ॥ अथ लवंगादि चूर्ण दोहा ॥ लवंग उशीर कपूर शुद्ध कृष्णगुरु छुड आन ॥ तजई
साईची जाई फल कृष्णजीर सम जानि ॥ ५३ ॥ पीपलि चंदन तगर पुनि अरु के को लंत्व गदी
र ॥ डोडे कशर नाग सम चूर्ण करी यह धीर ॥ ५४ ॥ औषध सै आधिसिता दी जै राजा जोग ॥ भू
षवठावन वल करन स्वास का सह दोग ॥ ५५ ॥ रोचन तर्पण के ठहि कतम क स्वास अती सा
रा ॥ पीन सय द्वा अरु चि पुनि गुल्म मेह कोटार ॥ ५६ ॥ संग्रहणी तन स्थूल अति दोष तीन
को नाश ॥ लवंगादि सब को कहै चूर्ण सब सै बाश ॥ ५७ ॥ इति लवंगादि चूर्णम् ॥ अथ कल्पा
ण गुड कथन कवित्त ॥ ५८ ॥ पीपलि विडंग मूल पिप्पली तमाल इंड्र चित्रक जीरा धान्य राज
वृक्ष ठानिये ॥ नागरत्रिकटु एला सस्त्र मरिच तज नीलि नीत्रि फल मध्य अज मोद सा निर्ये

और नाग पिप्पली कलौ जी डार ह दी पनी सौ उत्तम क हार ल रण सौ चल व मानिये ॥ और बिड म
 ध्य अक्षि डारी ये जू क र्क क र्क स र्क क प ड छान चूरन प्रता नियो ॥ ५८ ॥ क वित्त ॥ ३१ ॥ मुन काली
 जै चार पल आठ पल ति वी वी च गुड दी जै तु ला एक आनि कै धरी जी ये ॥ मंद करौ पाव क प चाई
 ली जै एक ठोर आवल व दर मान वल दे षि दी जी ये ॥ विंशति प्रमे ह कृश धान ही सै दी ण नर और
 र दी ण तिय संग पीन सहरी जी ये ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ अगनि मंद वय दी ण नर क्षयी रोग डर घात ॥ वे
 ध्या पुत्र वती करै रूप अधिक के जात ॥ ६० ॥ स्वर मेधा वय दृढ करन क द्यौर सायन आन ॥ रक्त
 पित्त विद्रं ग्रह सदा पिचु मात्रा परमान ॥ ६१ ॥ महा कल्यान का ह गुड करै जु भद्रा ण कोई ॥ उ
 त्त ग है स व ग्रंथ मै वल करण ही होई ॥ ६२ ॥ इति महा कल्यान गुड ॥ इति अती सार से ग्रहणी
 प्रवाहि कार कृती सार चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ अर्श निदान कथन दोहा ॥ वात पित्त कफ

सन्निपुनिरुधिरसहजभनिषष्ट॥ अर्शभेदयहजानियैहोईगुदातेकष्ट॥ ६३॥ कटुकति-
क्तकाषायप्रमरूक्षंशीतमदशोक॥ देशकालविपरीतितैकहनिमित्तएलोक॥ ६४॥ अल-
पवहुतभोजनकियैलेघनयुवतीस्पर्श॥ पुरवाईआतपअधिकईनेतैजानौअर्श॥ ६५॥ त्व-
चादोषअरुमेदपलआकृतिकहौवमान॥ वलयतीनकीठोडजहपलअंकरयजान॥ ६६॥
जेघपीडअरुअलपवितअरुचिदेहकृशजोई॥ कुक्षिशब्दआरोपवहुऔगुणएतेहोई
६७॥ अथरूपकथनदोहा॥ वेरखजरकपासफलसरसोंबीजसमान॥ वायमवेशीजा
नियेकटिशिरपीडाजान॥ ६८॥ अंकरछोटेपित्तकेशिथलहोतहैजास॥ उपमाजाकीजा
नियोगुदादाहवैतास॥ ६९॥ कफकीकहियैस्थूलअतिअलपपीडअरुषाज॥ हाथस्पर्श
पिछलवहुतगोस्तनजानहुसाज॥ ७०॥ सन्निपातअरुसहजकीसबलछनमिलि

होई॥ इनको वैद्य विचारिकै करै परीक्षा जोई॥ ९१॥ रक्तमवेशी पित्तप्रकृति वटकुं पल आकार॥ प
रवाली समजानियै स्रवै रक्त की धार॥ ९२॥ उजवर्ण वलहीन सवमल वेधन कै जास॥ कृष्
साध्य ए जानियो कछौ गुनी जन रास॥ ९३॥ अथ असाध्य लछन दोहा॥ हाथ चरण मुख ना
भि गुद अंड शोथ वहु जान॥ गुदा शूल पुनि हृदय दुख कछौ असाध्य विधान॥ ९४॥ इति नि
दाने॥ अथ चिकित्सा दोहा॥ शस्त्र अग्नि अरु दार सव भेषज चौथा एह॥ पथ्य अपथ्य वि
चारिकै पीछे औषध देह॥ ९५॥ अथ अर्श लेप दोहा॥ कटु तोरी अरु हलद सम सै सपतै ल से
जोग॥ सर्व ते उत्तम लेप यह हरै मवेशी रोग॥ ९६॥ रजनी पोहर दूध घसिले पम वैशी जाई॥ मि
न्न योग को शात की लेप कीये नर हाई॥ ९७॥ वछी मूत्र करे जदल ऊपरि लावै पीसि॥ दुष्ट म
वेशी नार है इन सम नाही रीस॥ ९८॥ अथ स्वेद दोहा॥ गोमय पीडी जोग इक दूजै जव जड

आन॥ अथ रास्नासौ फहोपेचमवेत्तु जान॥ ७८॥ पत्रसुहोजनपीसिके अगनि संयोगे सेक॥
 ७९॥ योगमै एकहे दुष्टमवेशी छेक॥ ८०॥ इति स्वेद॥ अथ गुटिका दोहा॥ तिलभस्मात्तकहर
 डगुडसम करिली जैएह॥ कास स्वास ज्वर पोंडु सीह हरे मवेशी गेह॥ ८१॥ अथ प्ररणा पिंडी दोहा
 मिरच भाग इकली जीये श्रुंठी भाग ले दोई॥ चित्रा आठ प्रमान करि प्ररणा सोल ह होई॥ ८२॥ इ
 न औषध का न्द्रा करि दूणा गुडमहि घालि॥ पेठ अफारा गुल्म गद दुष्टमवेशी टालि॥ ८३॥
 इति प्ररणा पिंडी॥ अथ छंदः॥ समत्रिकुट विफलानि शोदनं अरु सुगंध त्रय मे लिये॥ चवकौ
 डसौ फ विडंग या वालवण पेच त्रय मे लिये॥ अज मोद पीपली मूल विल्व गिरि हिं गुच्चार है स
 म करौ॥ वच देइ औषध अष्ट विंशति चूर्ण पीसि पात्र मै धरौ॥ ८४॥ टंक चारि चरणा गरम
 पाणी योगा रंड ते लका॥ अवलेह की जे चाटिली जे होई औषध सेलका॥ यह रोग हंता अ

तह

ता अर्शजेता स्वासकाशभगेंदरा ॥ हृदिपाश्वर्षशूलप्रमेहकामलपांडुरोगकोंहैहरा ॥ ८५ ॥ वसि
 शूलसीहहरैगुदाकृमिअंत्रवृद्धिग्रहणीगमै ॥ आमवातअरोचकउदावर्तकभूतदोषइस
 तैममै ॥ ज्वरदोषजाकोंप्रजानाहीविजययाधैस्त्रीजणै ॥ यहविजयचूरननामजाणैव्याधि
 सबकोयहहणै ॥ ८६ ॥ इतिविजयचूर्ण ॥ अथपंचसमचूर्णदोहा ॥ श्रुंठीहरदपीपलितिवी
 सोंचरसाथमिलै ॥ ८७ ॥ जठरशूलआध्मानअर्शआमवातसबजाई ॥ ८८ ॥ इतिपंचसमगरम
 गरमपाणीसोंटेकदोईदेणदोहा ॥ ^{पारा}अरुचिनाइइयवश्रुंठीसंधववेतल ॥ चूरनदीजैतक
 सोंरोगमवेशीरेलि ॥ ८९ ॥ लीजैमाषणधेनुकातामहिति लघालेति ॥ वहतदिवंसजोबा
 ईशैरक्तमवेशीहंति ॥ ९० ॥ गजकेशरनवनीतसितएकठौरकरिजोग ॥ सिद्धयेगपेडित
 कैहौरक्तमवेशीरोग ॥ ९१ ॥ कुडामृशलीश्रुंठीशामवचशूरनलेआन ॥ चूर्णपीवहतक

ॐ करै मवेशी हान ॥ ८१ ॥ सैंधा झुठी अजमोद चित्रक और मरिच सम ठेलि ॥ तक्र साय जो सात दि
न अर्श पोडु गंदरै लि ॥ ८२ ॥ अथ अगनि मुख चूर्ण दोहा ॥ भागा एक लेहि गुको दूणी दस महिषा
लि ॥ त्रिगुणी पीपलि झुठी चतुःपंच जवानी डालि ॥ ८३ ॥ षट्गुण चित्रा हरड द्वै अठ्गुण कुठ
रलाई ॥ चूर्ण पीपे पीसि कै उस्म वारि सोंवाई ॥ ८४ ॥ दही मस सों पान करी कह्यो वात ह चूर्ण
उदर अजीराण ही है विष हारै मवेशी तर्ण ॥ ८५ ॥ यह औषध दीपन कह्यो करै मूल को नाश
कास स्वांस द्यौरोग को यावै आवै रास ॥ ८६ ॥ इति अगनि मुख चूर्ण ॥ अथ नारायणी चूर्ण क
वित्त ॥ ८७ ॥ जीरक ^{जो ग} त्रिफल ^{जो ग} वचा ^{जो ग} त्रिकुठ ^{जो ग} हपुष ^{जो ग} धान्य ^{जो ग} कुठ ^{जो ग} सटी ^{जो ग} अजमोद ^{जो ग} यल ^{जो ग} जीरा ^{जो ग} दी ^{जो ग} जीये ॥ चि
त्रक ^{जो ग} विडंग ^{जो ग} वायु ^{जो ग} अजग ^{जो ग} धाशत ^{जो ग} पुष्पा ^{जो ग} वीरज ^{जो ग} टापे ^{जो ग} चतूरा ^{जो ग} दो ^{जो ग} श्यार ^{जो ग} दी ^{जो ग} जीये ॥ दीपनी ^{जो ग} मिलाई
कटु ^{जो ग} ग्रंथि ^{जो ग} सव ^{जो ग} प्रत्या ^{जो ग} हार ^{जो ग} चोक ^{जो ग} धरि ^{जो ग} उन ^{जो ग} ती ^{जो ग} समा ^{जो ग} त्रा ^{जो ग} सम ^{जो ग} की ^{जो ग} जीये ॥ दुद्रफला ^{जो ग} दो ^{जो ग} इ ^{जो ग} भाग ^{जो ग} त ^{जो ग} वृत्ति

विभागमेलिदेतीलीजैतीनअंशवजीहोंकरीजीये॥८९॥ दोहा॥ औषधनोतनसकलकृति
 छाणीसुखवास॥ यहचूरनरेचकउदरकरैरोगकानाश॥९०॥ पाचनरुहेहनआदियह
 स्निग्धकोष्ठकोजोग॥ कहोंऔरसवनामलेतवजानैसबकोई॥९१॥ कवित्त॥३१॥ कास
 स्वासपोंडरोगज्वरंकुष्ठगलग्रहधूमध्वजमेंदहोतहृदेरोगगानिये॥ औरजोग्रहणी
 गदगुदाकेनिधःटव्रणअनुपानधेनुदुग्धइनहींसोंसानिये॥ गुल्मकोंवदरनीररा
 स्नाकापवातरोगअरसदाडिमजलघृतविषयानिये॥ धेनुतक्रपेटरोगरवणिदु
 ष्मजोगअजीरनकोंउष्मजलअनूपानजानिये॥१००॥ दोहा॥ पेटपीडसोंतीरजल
 दहीमस्तविदुभंग॥ देहुसद्यआध्मानगदअनूपानयहसंग॥१॥ इतिवृद्धोरायणी
 ॥ अथपथ्यदोहा॥ इकपिचुलीजैपीपलीतिवीएकपलमान॥ सितषेडपलमेति

कैको जैक पडा न ॥ २ ॥ जाहि उदर आ ध्यान विद को दर क फल पित्त ॥ पिचुमात्रा चरण सहते
प्रलरोग को मित्त ॥ ३ ॥ इति लघु नारायण चरण ॥ अथ अं पण्य ॥ रेच लेप अरु रक्त घन अरु अग
निहयी पार ॥ गठी चावल कुलस्य यव भोजन यह सुख कार ॥ ४ ॥ अथ अं पण्य दोहा ॥ उत्काट
आसन शरित्त जे लवे गरो धतिय संग ॥ चढै अश्व अरु गडिका करै मवेशी जंग ॥ ५ ॥ इति अं प
ण्य ॥ इति अं पण्य जे न चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ अग्नि मांघ निदान दोहा ॥ मेदती द्या अवि
षम सम अग निमांघ है चार ॥ माधव क ह्यो विचार सब उनतें मन मै हि धार ॥ ६ ॥ अथ चिकि
त्सा दोहा ॥ सें अदर डै पी पली चरण चित्रा मे लि ॥ उस्मवारि सों जो पिये न एव न्हि कोरे लि
७ ॥ अंठ पी पली हरड समल वण साथ अज मोद ॥ उस्मवारि अथ वातरुण त क दुधा होत
विनोद ॥ ८ ॥ हरडै नागर चरण करिता महि मुन का पाई ॥ उदर रोग अरु भूख बह प्रात ह कालै या

वै०

४२

ई॥ य॥ पीपलीं मुंठी हरीतकी सों चरति वीं समान॥ तम नीर सों पीजीये अगनि में दकी हान॥ ये
अथ दुधा करन गुटिका दोहा॥ विफला विकटा हिं गुलौन अरु अजवाइन में लि॥ सम गुड
गोली की जीये मे॥ अगनि को रेलि॥ १०॥ विफला विकटा वाइ विडंग॥ सेंधा सों चरति वील
वंग॥ हिं ग अजवाइन चित्रा ठान॥ दोनु जीरे अनारदाना आन॥ ११॥ इन औषध को चूरा
कीजे॥ नीवू को छोट दोनु दीजे॥ प्रात स में दोइ टंक जु याई॥ मंद अगनि को तुरत न साई॥ १२॥
इति मंद अगनि चूर्ण दोहा॥ पीपलीं हरडै सेंधु सम चूरन लीजे टंक॥ उष्ण जल सों पीजीये
अनल होई॥ नेः संक॥ १३॥ हरडै मुंठी मिलाई सम दुनी मुन का पाई॥ अरु सेंधा लो में लि
ये अन्न वत्त असायाई॥ १४॥ दाडिम पीपलीं हरड सम भिन्न भिन्न गुडामे लि॥ अम अजी
मिरो अथ पीपल वेंध को यहरे लि॥ १५॥ वकी हरड का चूर्ण करि भोजन आगे याई॥ जीभ के

रामः

४२

अधनकाडा ह्यो जोग समुजाई ॥ १६ ॥ आद्रक सेंधा लाइ करि सावे नरना कोई ॥ हृदये अगनि दी
पन करै प्रवेक भूषका होई ॥ १७ ॥ हरडै पीपलि श्रुंठी समझन काकी जै चूरा ॥ भूरु डेदी पन
करै हरै विदेश को तरा ॥ १८ ॥ अथ विडंगादि चूरा दोहा ॥ सोचर चित्रा जी रहै हरड वाय
विडंगा ॥ त्रिकुटा अरु अजवा इनी अजमोदा धरी संग ॥ १९ ॥ आमल वेतस विडल वरा ॥
धान्य तित्ति टीसै लि ॥ पर्वत कूट पचै अहो कहा भोजन काषेलि ॥ २० ॥ इति विडादि चूरा
दोहा ॥ त्रिकुटा सेंधा वजी रहै हीग भाग अजमोद ॥ टेक टेक ए भाग ले चूरा परम प्रमोद
२१ ॥ प्रथम कटु भोजन करै समै घृत सोली जै मेल ॥ वात गुल्म जठराग्नि को हिंजवा
हक कीषेल ॥ २२ ॥ इति हिंजवा हक दोहा ॥ हरडै पीपली श्रुंठी विल अरु करंज सम पाई
तामै मिश्री सम कही वडवा मुख कहवाई ॥ २३ ॥ कही जु चूरा वैद्य मुख अबुभव की

विल

वै०
४३

नौगह॥ गुरुभोजनजाके उदरजरैशीघ्रयहलेह॥ २४॥ इतिवडवामुखचूर्णदोह॥ गजकेशर
तजगलचीतीनदोईअंशाक॥ सुंठीपीपलीमिरचावटपंचचारौनेक॥ २५॥ सवओषधइ
कठोरकरीता॥ मिसरीमेलि॥ चूरणदीपनाकह्योअग्निमंदकोपेलि॥ २६॥ इतिअग्नि
मोद्यचिकित्सा॥ अथअजीर्णचिकित्सादोह॥ हिंगुपत्तीससौचरवचाहरडैविकुटा
जोग॥ तीव्रअजीरनप्रूलसवएतेजावैरोग॥ २७॥ ओषधअन्नप्रभातमेंअजीरनको
नहींजोग॥ संध्याकालेदीजीयैपरभातैविषरोग॥ २८॥ इतिअजीर्णचिकित्सा॥ अथवि
स्रचिकाओषधदोह॥ संधाकूठजुदोइसमकल्कचुक्रअरुतेल॥ २९॥ मर्दनकरौविस
चिकाप्रूलविवारनखेल॥ ३०॥ अप्रवकर्णदंतीतिवीपीपलीपीसहमाहि॥ कोशजलसो
दीजीयैखल्लप्रूलसवजाहि॥ ३१॥ जातीफलअरुचुक्रसममेलितेलतिलमाहि॥ अ

शमः
४३

इससे मर्दन कीजिये खल्लरोग सब जाहि ॥ ३२ ॥ तेल तिलों का आनि कै कर पद मरु अंग ॥ सि-
द्ध योग में एक होत विसूची भंग ॥ ३३ ॥ जाहि विसूची होत है ताको तया अतीव ॥ लें का करि
पाइये प्यास बुजावे जीव ॥ ३४ ॥ अथ अर्क तेल दोहा ॥ प्रस्य लेहु दल आकर स अर्ध तूर रस
मेलि ॥ यो हरि ओर सु हो जना प्रस्य प्रस्य रस मेलि ॥ ३५ ॥ द्वैपल सैधव कुठ द्वैकल्क जु करि
ये एह ॥ सम अर्ध को जी दही तेल प्रस्य मै देह ॥ ३६ ॥ पचौ तेल मंदाग्नि सौ सिद्ध भाजन म
हि घालि ॥ खंज पंगु खल्ली विसूची आम पाच गृध्र टालि ॥ ३७ ॥ इति अर्क रसादि तैले ॥ इ-
ति अजीर्ण विद्वेचे का चिकित्सा समाप्तम् ॥ अथ कृमि चिकित्सा कथन दोहा ॥ कृमि क
हि ये द्वैभोतिके बाहिर अंतर भेद ॥ इन तें नर रोगी हवै इन सों पावै भेद ॥ ३८ ॥ एक कृमि
उदर मध्य द्वितीय वसन यूकादि जीव द्वैभोतिके तिस का विचार माधव निदान तें जा

वै०
४४

नना॥३४॥अथचिकित्सादोहा॥हरडैसैंधवक्षारयुतकंपिलवायविडंग॥तक्रसाथपीवैसु
वहकृमिकोरहेनसंग॥४०॥कृमिअजवाइनआनकैजलमैराधौराति॥प्रातपीसिखाए
हुवसनपीयेसुसु॥कृमिजाति॥४१॥वाइविडंगसैंधातिवीसमकरिपीसिहाह॥तसोदकसो
पीसिणीयकृमिनाशकरेह॥४२॥नीवछालत्रिकटातिवीसमकरिपीसिहाह॥नीरउस
सोपीजीयेकृमिकोहरैजुएह॥४३॥नीवछालत्रिकटातिवीत्रिफलाअइवचपाईखादि
रकुडाविडंगसमचूरनकरहमिलाई॥४४॥धेनुमूत्रसोटांकइकसातदिवसपरमान
हरैकृमिकेरोगकोउदरशुद्धकैजान॥४५॥सोरठा॥छाकबीजकोपीस॥घृतसोदोत्रैमेनि
करउदरवृमिकोपीस॥कह्योजुवैद्यविचारिकै॥४६॥इतिकृमिरोगचिकित्सासमाप्ता
अथपांडुगंगनिदानचिकित्साकथंनदोहा॥पाचभांतिकोपांडुकहिवातपित्तकफजोई

समः
४४

संनिपात अरु मृत्तिका पांडुरोग यह होई ॥ ४७ ॥ दिवा स्वप्न तीक्ष्ण अमल लवण मधु मृत जान ॥ रक्त
चाको दूषिके ॥ पांडुरोग है आन ॥ ४८ ॥ अथ वात पांडुरोग लछन दोहा ॥ त्वचा मूत्र अरु न ॥ न सवे
है कृष्ण अरु लाल ॥ के पतो द आना ह भ्रम यहै वात की चाल ॥ ४९ ॥ अथ पित्त पांडु लछन दोहा ॥ पीत
नेत्र अरु कृशत जल तया दाह ज्वर होई ॥ विष्टा भेदन पीत सम पित्त पांडुता होई ॥ ५० ॥ अथ कफ पा
ंडु लछन दोहा ॥ तं श आलस प्रपथु कफ नेयन मूत्र त्वग सेत ॥ तन भारी मुख गिरै यहै प्रभा कफ दे
त ॥ ५१ ॥ अथ मृत्तिका उपद्रव कथन दोहा ॥ अक्षि कूट अरु गंड भ्रू चरण नाभि कै शो ज ॥ रुधिर प्रलेख
सो मल ड्रवै घटै दोह की उज ॥ ५२ ॥ इति साध्य ॥ अथ पांडु चिकित्सा दोहा ॥ सात दिवस गो मूत्र ले पी
वै जो परभात ॥ अथवा चूरा लेह का जल सो पीवै प्रात ॥ ५३ ॥ त्रिफला वांसा कौड नीव छिन्नो द्रव कै
रात ॥ करै काथ अरु सहित युत पांडु कामला जात ॥ ५४ ॥ लोह चून त्रिकुटा तुतिल है है टंक जु आ

वै०

४५

न॥ सवसममादिकमेतिकैगोलीसहितमिलाई॥५५॥ प्रातसमैलेतक्रसोंपांडुरोगसोंजोग
औरकामलादोषहेताकोषोवैरोग॥५६॥ लोहमैलसंतप्तकरिधेनुमूत्रसोंसीच॥ यहचर
णमधुसर्पिसोंभोजनआदिकेवीच॥५७॥ अग्निजननदोषनप्रवतलशोथपांडुकारोष॥ इ
नऔषधकेयोगतेनाशेंइनकेदोष॥५८॥ अथनवायचूर्णकरधनदोह॥ त्रिफलात्रिकुटा
मुस्तभनिचित्रकवायविडंग॥ समचूरनघृतदोइयुत्तरजलोहमेले॥५९॥ पांडुरोग
अर्शहृद्रोगकुष्ठहेतकामलानाश॥ प्रातसमैभक्षणाकरैरहेनरोगकीवास॥६०॥ त्रिफला
बीजैअशत्रयतैसैंत्रिकुटालीज॥ चित्रकवाइविडंगसमतीनभागलेदीजु॥६१॥ शिला
जीतअरुजोहरजपेचभागयहलेह॥ तैसैंसोवनमदिकाशुद्धदेखिवोदेह॥६२॥ ओठ
भागतामहिसितापीसिचूर्णकरिलेह॥ सहितघालिलोहपात्रमैंइहुवरमूत्रादेह॥६३॥ अ

अमः
४५

गनिदेविदीजेसरसजोगराजयहआन॥पांडुरोगविषमज्वरजाहिअरोचकजान॥६४॥
हृमाहिकामलामेहकसनअरुस्वास॥कष्टमृगीकेरोगकोकह्योरसायनयास॥६५॥
नवायसचूर्ण॥लोहपासगोदूधलेकरैकाथजलजोग॥दिवससातकेपानतेनायेएतेरोग
॥६६॥पांडुरोगक्षयजोराज्वरग्रहणीपीडितदोष॥भोजनपथ्यकरैसदाकहेनहोवैशो
॥६७॥मरिचशुंठीअजमोदपुनिविजसैधवपास॥आम्लतक्रसोसातदिनकरैपांडुका
नाश॥६८॥इतिचित्रकचूर्णदोहा॥सितातिवीपलआधलेजलसोपीवैजास॥पित्ततेजा
नेकामलाकरैशीघ्रयहनाश॥६९॥त्रिफलावासानिवभूकइंनीवगिलोई॥मधुसोदीजे
काथकरिकमलपांडुकोषोई॥७०॥सतगिलोईचाटोसहत्तकैत्रिफलामधुजोग॥रसवा
सामाथौमितैजाईकामलारोग॥७१॥इतितीनयोगः॥अथकामलाचंजनदोहा॥गुग्मार

वै०
४६

संजनकरै कामलानाशकरै॥ चाहे कामलदूरिकरितक अशानकोंलेई॥ ७२॥ लोहचूनअरु
है हलद त्रिफलाकोडमिलाई॥ घृतमधुसोंजोचाटहै तुरत कामलाजाई॥ ७३॥ इतिलोहचूर्ण
कामलाकों दोहा॥ विकुटाहलदअरुआवरेलोहचूनकोंमेलि॥ सिताद्वौद्रघृतलोहदेमें
दकामलारेलि॥ ७४॥ इतिधात्रीलोहकामलावायकोंदोहा॥ गेरुहलदअरुआवरैअंज
नकरियेनैन॥ कमलवायनाशै॥ कलसवओषधमेंअंन॥ ७५॥ इतिकमलवायअंज
न॥ अथपथ्यदोहा॥ छट्ठिविरेचनजाणैयवगेहूसाठीआन॥ मृगमसूरिअरुआठकीप
थ्याहैआन॥ ७६॥ फललीजैवेंदालकापीसिपोटलीकीज॥ नासासंघैश्वासकरिजाहिका
मलादीज॥ ७७॥ अथअपथ्यदोहा॥ धूमपानमैथुनसुराभारीअन्नहैसोई॥ कोधधूपपेट
कचठासांडुविवर्जितहोई॥ ७८॥ इतिपांडुरोगनिदानकमलवायचिकित्सा॥ अथरक्त

मम
४६

पित्तचिकित्सा दोहा ॥ घर्मशोक व्यायामश्रम अतिप्रसंगस्त्री होई ॥ लवण दारुतीक्ष्ण उदक
कटुक आम्ल हे सोई ॥ ७८ ॥ पित्तविगुणता होई जो सवैनासिका अंग ॥ द्विधा भेद है रक्त के अ
र्ध ऊरध परसंग ॥ ७९ ॥ अथ रक्तपित्तचिकित्सा दोहा ॥ वासादाय हरीतकी करै काय समभा
ई ॥ सिताक्षौद्र प्रतिवाप दे रक्तपित्त नर हाई ॥ ८१ ॥ हरडै मधुसंयोग करि वाई प्रातः जोग ॥ दी
पन पाचन एक द्यौरक्तपित्त हर रोग ॥ ८२ ॥ श्लेष्म शूल अतिसार हर कारखास वै जास
श्लेष्म धंक द्यौ प्रशस्त य हर रोग इनै का नाश ॥ ८३ ॥ छाग दुग्ध प्रशस्त वा हि रक्तपित्त को जा
ग ॥ धेनु दुग्ध जलं पंचगुण करहु काय सलोग ॥ ८४ ॥ द्राक्षा नागर काय करि रक्त प्रवाह
को देई ॥ एती नौरक्तपित्त को इन को नाश करेई ॥ ८५ ॥ चंदन लोध्र उशीर विल्व मोथानं लमिला
ई ॥ अंगविर अरु इद्रिय बमालाने जरनाई ॥ ८६ ॥ पाठा उत्पल धातु की अस्यती ससम ठाई ॥ दा

डिमत्वचाईलाईचीगजकेशरसमभाई॥८७॥ नीलकमलअरुमोचरसअरुमजीठसमआ
न॥ पद्मरागअरुशर्कराआम्रबीजसममान॥८८॥ फलजेवूसमचूर्णकरतेडुलजलसोपो
य॥ मधुसंयोगाजातुहेरक्तरोगकीजीय॥८९॥ आमदोषज्वरअर्शपुनित्थामोहअतिसार
रजवंधनस्त्रीकोकह्योछट्टिमेटिहेभार॥९०॥ रहेनगर्भतियकेउदरआपनकरैजुएह॥ क
ह्योजोगअधिश्रिनीरक्तपित्तदेह॥९१॥ इतिचंदनादिचूर्ण॥ अधपेठारखंडः दोह
पुरातन्नपेठावृद्धअतिकठिनहोईतेवलीज॥९२॥ त्वचाअस्थिसवकाठिकेऔरविव
र्जितबीज॥९३॥ तिसिवीचकेकूष्मखंडतामहिघीउमिलाई॥ गाठवस्त्रमहिघाणिज
लरायोभजनकरेई॥९४॥ वसनवीचकेकूष्मखंडतामहिघीउमिलाई॥ प्रस्थाकगुर
मुखसुएधारिदीचमहिपाई॥९५॥ मधुआम्राजवृहोईसवतकरायोलेपिंड॥ द्रव्य

जलजो लजीयेतामहि शतपल षेड ॥ ८६ ॥ मलीयुक्ति सौपात करितामहि औषध देई ॥ धनीया
मरिच जिंधस शुक्ति शुक्ति सवलेई ॥ ८७ ॥ सूक्ष्मकी जे छाणि करितामहि पातरलाई ॥ दावी
सेतीमहि यैगाठा केतवयाई ॥ ८८ ॥ मात्रा दी जे देखि वलकास स्वास दत्त दीण ॥ दूह छुटि ज्व
र तृषत जन अस ह्वेलका होन ॥ ८९ ॥ हृदये पीड अस रक्त पित्त यक्ष्मा कुप स्वर भंग ॥ पीन
सको अति जोग है वळे कामका अंग ॥ ९० ॥ रहै पण्य अस याई य होइ पुष्ट वलवान ॥ कह्यो षेड
कूष्मांडा इन हीरोग प्रधान ॥ १ ॥ इति कूष्मांड षेडः ॥ अथ नासारक्त उपाध कथन दोहा ॥ दाडि
म फूल हरीतकी दूव कसुं भरलाई ॥ सीतल जल सेना शदेर कतना सिका जाई ॥ २ ॥ अथ हि
चकी औषध चोपाई ॥ दूव हरड दाडिम की कली ॥ नासाले तलो हंन क हरी ॥ माषी वीठला या
रस लेई ॥ हिचकी जाई नास जोई ॥ ३ ॥ दोहा ॥ चंदन लोद प्रियंगु सहर डै धावे फूल ॥ महल

ठी अरु सारि वामो घाले समतल ॥ १० ॥ सठी चावल वारि सों टेका एक परवान ॥ तामें मे लो शर क
 रारक्त पित्त की हान ॥ ११ ॥ घृत में भू नौ आवरे पी सहज लमहि आन ॥ मस्तक की जेले प्रयहर
 कत न हो वै प्रान ॥ १२ ॥ दाडिम फूल अरु दूवर सशीतल जल सों सींच ॥ अथ वालक्त कहर
 तम डारह ना सो वींच ॥ १३ ॥ इति ने स्पे दोहा ॥ एलात जत मान पत्र दाखणी पली आन ॥ आध
 पल ली जीये और एक पल जान ॥ १४ ॥ प्राम दाख खरजर पुनि सिता यदि का होई चरण
 गोली सहत सों बाई कर्षवल होई ॥ १५ ॥ कास स्वास ज्वर छटि भ्रम मूर्छा स्वर रस भेद ॥ हिक्का
 तृष्णा शेष क्षय आद्य वात कोषे द ॥ १६ ॥ मुख नासालोह गिरै थूकै लोह संग ॥ जाहि अरोच
 क पाश्र्वे अर्ति गोली बाई अभंग ॥ १७ ॥ एला कहिये गो टिकारक्त पित्त को पाय ॥ मोदक तो
 प्येण एक बीक हे रोग संव जाय ॥ १८ ॥ इति एलाद्रि गुटिका दोहा ॥ अधोगसन को छटि है

क्तो

ऊर्द्धगमनं कारेच ॥ दो वें ले घन शस्त है क ह्यो एह में पेच ॥ १८ ॥ मृगम सर अरु चणो वल्लभ
ठीचा वल्लभ जोग ॥ कोट्टवयव प्रशस्त है इन ते जा वै रोग ॥ २० ॥ पीपली सिता इला इचीत ज
लोचन सममेलि ॥ मधुघृत सो चाटे यहै श्वास कास को रेलि ॥ २१ ॥ पार्ष्ण्यूल अरु भूषम
दहस्त पाद अंग दाह ॥ जाहि अरोचक सुप्त जिह्व ज्वर कफ लोह काहि ॥ २२ ॥ इति शीतोप
नादि चूर्ण दोहा ॥ वो साली जे प्रस्य इक द्वे पल पीपली लेह ॥ सो लह पल सित प्र क र प
स द्वे घृत को देह ॥ २३ ॥ मेद अगनि परिपाक करिता महि मधुपल आठ ॥ लेह सदृश जानी भ
ई धरो रुवी के काठ ॥ २४ ॥ पार्ष्ण्यूल हृदि प्रूल को स्वास कास है जास ॥ कहौ जुवा सालेह
यह रक्त पित्त ज्वर नाश ॥ २५ ॥ इति वासालेह अथ प्रसोकः ॥ लोहिते छर्दे ये द्यस्तुं बहु शो
लोहिते क्षणः ॥ लोहिं झार दर्शी च म्रियते रक्त पैतिकः ॥ २६ ॥ इति रक्त पित्त चिकित्सा ॥

वै०

४८

अथ यद्माचिकित्सा दोहा ॥ वेगरोधत्रयदोषतेजस्य अरुसाहसमानि ॥ विषमाशनतेयद्मागदभे
दचाराजानि ॥ २७ ॥ माषनमधुअरुशर्कराताकीचटनीयाई ॥ द्यौरीरोगकोशस्तहैनिरभयदे
हरना ॥ २८ ॥ तालीसमरिचअरुशुंठीपुनिपीपलीलोचनवेश ॥ भागयथोत्तरलीजीयेकर
हैएकठेअश ॥ २९ ॥ द्विगुणसिताचूराकरहदोषदेखिकेदेह ॥ छर्दिशूलदरपांडुकोअ
तीसारकोएह ॥ ३० ॥ स्वासकासग्रहणीअरुचिमूठवातश्रीहरोग ॥ हरैइएतेदोषकोएही
दीपनजोग ॥ ३१ ॥ लघुकहियेतालीसएचरनजोगप्रधान ॥ सारंधरतेदेखिकेकहोयेय
महिअनि ॥ ३२ ॥ इतितालीसादिचूर्णश्लोकः ॥ तालीसपत्रेश्रीपुष्पचातुर्जातेसमस्तकी ॥ षड्
षण्त्वगुणश्रीकणकोलोजनेसमे ॥ ३३ ॥ चूर्णचतुर्गुणसितेतालीसाद्येदयापह ॥ कासखा
सरुचितकफहलनिर्दीपनम् ॥ ३४ ॥ इतितालीसाद्येचूर्णदोहा ॥ मिश्रीपीपलीशुंठीसम

देवकुसुम आसगंध जल सौ पी जै पी सि कै क्षयी रोग को फेध ॥ ३५ ॥ त्रिफला श्रुं विडंग तज
पी पलि भिरचल वंग ॥ मोथा पी पलि मूल त्रुटि देवदारु सम अंग ॥ ३६ ॥ पद्मराग अरु राग
नांग जल शर सुमिलाई ॥ सब ते दूनी शर्करा क्षयी रोग मिटि जाई ॥ ३७ ॥ लौंग आक के फू
ल सम गोली की जै पी सि ॥ क्षयी रोग को नाश करै कृपा जगदीश ॥ ३८ ॥ इति क्षयी रोग
को गोली ॥ अथ च्यवन प्राश निरूपते कवित्त ॥ ३९ ॥ पाटला कुंभेर मोथा अगर जीवती दा
व नीव कज्जूर खम दोनु इट सठ वानिये ॥ चंदन विदारी वंसा गोखरू कडारी दोनु पी
पली गिलोइ डोडे अग्नि मंथ सा निये ॥ षट् तलार्याणी शाली और प्याणी पृष्ठिक ही चार
माख मुद्ग प्याणी मेदा सटी आनिये ॥ जूगी वला विल्व त्रुटि पुष्कर त्रिपट पण्या पापंडा प
लास पल दार शुक्ति शानिये ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ ४१ ॥ पंचशत आवरे हरेई ली जै एक ठौर

जलद्रोणवीचपाईपरिपक्वकीजीये॥ जंबजाण्याखिन्नभाएकुलीवीचकाठिलयेवसनसो
 छाणिजलकडाहवीचदीजीये॥ तामेंमेलेतैलघृतद्वादशपलनिचारुषट्पलमधुदारज
 लमेंपभीजीये॥ आधातुलाघोडलीजेचारपलवेंशदीजेकाणालीजेदोईपललेहज्यो क
 रीजीये॥ ४०॥ दोहा॥ कुंकुमतज्जइलाईचीडारहुयत्रतमाल॥ पलपलबीजेएहसवसूक्ष्म
 मयीसिकेडार॥ ४१॥ सवइहकथोरमिलाइकैयुगतिपचावहलेह॥ शुभमहरतलेभिके
 तवयानेकोदेह॥ ४२॥ कासखासक्षतदीणवर्णअगनिबलवृद्ध॥ वातरकतस्वरभंग
 कोतिप्रहंषकोसिद्ध॥ ४३॥ वलमेधाअरुकोतिस्मृतिमूत्रकुक्षुकोणह॥ वालवृद्धको
 प्रष्टहेरुक्तपित्तकोदेह॥ ४४॥ सेवैनितअवलेहयहच्यवनप्राश्रुषिवाक॥ कथोरसाय
 नयुक्तिकरिइनसमबोहीपाक॥ ४५॥ इतिच्यवनप्राशअवलेह॥ इतिराजयन्माचि

कित्सा अथकासस्वासाध्वकानिदानंदोहा गुरुविदाहिविष्टेभरजअशशीतजलस्नान
अपतपशा आतपअमिलअध्वभारप्रमजान ॥ ४६ ॥ कफकृतभोजनरूक्षपुनिपवनधु
मवेगरोधकासस्वासाहिकामनुजइनतैउपजेवोध ॥ ४७ ॥ रुक्षअन्नव्यायासरजवेग
रोधसेकास वातपित्तकफक्षतक्षयीकहेपंचपरकास ॥ ४८ ॥ अथस्वासाध्वनामदोहा क्षु
द्रतमकअरुछिन्नमहऊर्द्धपंचवैस्वास याहितैसवदोषहेतातैकरियेनाश ॥ ४९ ॥ हि
काक्षमकथनदोहा क्षुद्रायमलाअन्नजामहतिगंभीरापंच कहेपंचप्रकारहिका
करहचिकित्सारंच ॥ ५० ॥ लछनमाधवमैंकहेतातैदेखिविचार साध्यअसाध्यकौस
मकैकरहचिकित्सार ॥ ५१ ॥ अथकासस्वासचिकित्सादोहा पीपलिपुष्करमूलशुंठीमो
थाहरडमिलाई गुडसोंगोलीकीजीयेकासस्वासमिटजाई ॥ ५२ ॥ कट्टिकुटिफलारास

नाछिन्नाचित्रविडंग॥सवसमलीजैशंकराकासस्वासहरअंग॥५३॥त्रिकटाअरुद्रेवदास
 समधौरविशालामूल॥तामैमिश्रीडारिकैऊईस्वासकौचूर॥५४॥अथकालाग्निरसदोह
 पीपलिडरडैअरुअसगंधकवासालेह॥वृद्धषडुत्तरचूर्णकरणतवंबूलपुटदेह॥५५॥
 जैनावनवीसइकमधुसोयावैजास॥दोइरतीरसकासकौतवहरहीनाश॥५६॥इतिरसवा
 गभटातदोहा॥मोथाभागीपीपरीपुष्करमूलकचूर॥काकडाअंगीमिरचसमअरुनिशोत
 महिपूर॥५७॥सूक्ष्मपीसिचूरनकरैजलसोपीवैजास॥प्रातसमैजौलीजौयेस्वासकासकौ
 नाश॥५८॥पुष्करमूलकुलत्पशुंठीकडारीवृषभेलि॥वारिउस्मसोपीजौयेस्वासकासकौ
 रेलि॥५९॥शुंठीभडंगीपीपलिकाकडअंगीअडद्धि॥लेहछीलकुमारिसजलसोगोलीभ
 द्धि॥६०॥कह्योमानदंक॥ईयहमुखमैराबैरान्ति॥ताकोरसमुखमैघुनैकासस्वाससवजा

त॥ ई॥ वासापीपलीश्रुंभीसमगोलीमंधुसोमेलि॥ टंक एकभचनकरैबोसीकोयहपेलि॥ ई॥
चवककंडारीश्रुंभीश्रुंभीपीपलिसमकरिपीसि॥ तप्तवारिसोंटंकइकबोसीधोसीपीसि॥ ई॥
यवाधारपीपलीहरडसयवाश्रुंभीरत्नाईगुडसोंगोलीमेलिकैसवैषघमिटजाई॥ ई॥ की
करिछिलअरुआवरहरवहेडासाथ॥ इनकीकीजैगोटिकाघघसालियैनाथ॥ ई॥ मिर
चजुलीजैटेकतीनपांचकवडीलेह॥ दोईटोकविषवीचदेसदामपीसियैएह॥ ई॥
जैलीकीजैमंगसमकवडीकीजैराय॥ करैनासकफघघकोकहोशास्त्रकीसाथ॥ ई॥
श्लोक॥ श्रुंभीकंदुविकफलत्रयकंडकारीभागीसपुकरजटातवाणानिपेच॥ चूरी॥
विषदशिशिराजलेनहिक्काखासोईवातकसनारुचीपीनसेयु॥ ई॥ अथअसा
धलछन॥ पूषाभमरुणशपावेहरितेनीलपीतके॥ निष्टीवेछासकासातोनीजीवतिह

तःस्वरः॥ **दर्प** इति स्वासकासचिकित्सासंग्रहः॥ अथ हिक्काचिकित्सा दोहा॥ श्रुंठी हरडपीपरित
 ष्ठाश्रुंठीपीपलिश्रुंठी॥ सिताक्षौद्राचूणा युतहिचकीरायैमंठि॥ ७०॥ इति दोईजोगकहेदोहा
 जाइकीलीबहलाकराणहैहैटेकप्रमान॥ मधुसोंगोलीगुंजसमहिक्काहोईहिरान॥ ७१॥ श्रुं
 ठिछागकेदूधसोंगकयोगहैसिद्ध॥ नागरगुडसोंनासदेहिक्काहोईनखुद्ध॥ ७२॥ मादिक
 विष्टास्तन्ययुतनासादेइहिकरोग॥ बीठअलक्तकवारिसोंदेईनासहैजोग॥ ७३॥ इतियोग
 हैनाशकही॥ अथधूमपानदोहा॥ मनशिलहरडजुआवरपीसिहसमकरिजोग॥ मुख
 सोंधूणीलोजीयैहिडकीनासैरोग॥ ७४॥ अथचूराणदोहा॥ भाडेगीअरुश्रुंठीसमउस्मवा
 रिसोंपाई॥ हिक्कापंचप्रकारकीलेतशीघ्रमैजाई॥ ७५॥ इति हिक्काचिकित्सा॥ अथस्वरभं
 गचिकित्सादोहा॥ आलवेतसचवककोसतितिडोकतालीस॥ तुगाक्षौरत्रिसुगंध

समं सूक्ष्ममजीरापीसि॥ ७६॥ वां धौ गुडमहिगोष्टिकापीनेसस्वरक्षयाह॥ कफ अरु अरु चिप्रशस्त
भानिचवकादिकयहह॥ ७७॥ इति चवकादिगुटिकादोहा॥ धात्री हलद अजमोद चित्र
क्षार चूर्ण समलेह॥ मधुघृत सौलेही करौ स्वरभंग नास करेह॥ ७८॥ कलितरु ^{ममिच वीपल} कुस्मासिंधु
समलेहवारिसौ चूर्ण॥ जाहि रोग स्वरभंग कौ कहौ पंडिते पूर्ण॥ ७९॥ धात्री चूर्ण पीसिस
मधेनुदूध सौ प्याई॥ कहौ एह सिद्ध योगवर स्वरक्षय ततक्षणा जई॥ ८०॥ इति स्वरभंग
चिकित्सा॥ अथ अरोचक चिकित्सा दोहा॥ मरिच सौ फ अरु तित्तिंडी दाडिम दासमा
न॥ जीरा दौद्र सिंता सहित रुचिकर दीपन जान॥ ८१॥ करहु लेहमधुमिरच समकफ
अरोचक होई॥ आद्र करस अरु सहत सम कहै द्वियोग सब कोई॥ ८२॥ कास स्वांस प्रति
श्याय कफ अरु चि जाहि कफ मीत॥ आद्र कसे धा होइ मिलि भक्ष अरु चिको जीत॥ ८३॥

वातपित्तकफदोषभयशोकलोभअतिक्रोध॥मनविपरीतभोजनकरैगंधरूपसैबोध॥८३॥
इत्येतैअरुचीमहाताहिभूषमिटिजाई॥जवप्रसन्नमनहोईतवअशनचोगुताबाई
८४॥इतिअरोचकचिकित्सा॥अथछर्दिउपद्रवदोहा॥काससासवैचित्तज्वरहिक्काट
साहदोग॥अंधकारआवेनयनकहैउपद्रवलोग॥८५॥अथचिकित्सादोहा॥घृतसै
धवचाटोपवनतीनलवणसंयुक्त॥अथवाअूषणमेलिकैपननछर्दिहैमुक्त॥८६॥
इतिपवनछर्दिकोतीनयोगकहैदोहा॥लाजमसरयवमुद्रकृतछर्दियैअूषणदेहि॥ताम
हिमधुसोमेलिकैपित्तछर्दिकोलेहि॥८७॥वालाचंदनतगरवृषअरुमृगालसंयोग
इकइकतंडुलजलसहितपाईदोइमहिभोग॥८८॥पांचयोगवमिपित्तकेकहेएह
मनलाई॥पंडितऔसधसमजिकैकरैउपावनाई॥८९॥पित्तपण्डाकायकरितामहि

सहस्रमिलाई और योगमधुहरंड लिह पित्त छट्टे मिटि जाई ॥ ८० ॥ त्रिफला नीच पटोल पत्रता
महिमे लिगि लोई ॥ काय होइ मिलि पान करि छट्टि नाश पित्त होई ॥ ८१ ॥ इति पित्त छट्टि काय
अथ कफ छट्टि दोहा ॥ त्रिफला वाइ विडंगा श्रुंठी दीजै मधुसौ चूर्ण ॥ मोथा श्रुंठी विडंगा सम हरे
जुकफ कौतर्ण ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ मन शिलपी पलि मरि च समान ॥ कैथनी रसो न सान ॥ बील
मिलाई सहस्र सौ याई छट्टि रोग छिन माहि पराई ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ काक श्रुंगी मधु सहित अ
रुद्र सलभा जोग ॥ चाटो चूर्ण मधु सहित कफ वमि जावै रोग ॥ ८४ ॥ गज के सरालाल वंग वे
रम ज्जधन मोलि ॥ चंदन लाजा पीपली फूल प्रियंगु सम रेनि ॥ ८५ ॥ सिता चूर्ण मधु युक्ति करि
कहो लोह को आन ॥ वात पित्त कफ छट्टि संवरीये होत हेरान ॥ ८६ ॥ इति एला दिल्ने दोहा
कवल बीज अरु लचीला जा सिता लवंग ॥ मधुसौ चाटो संग ए छट्टि रोग को भंग ॥ ८७ ॥ जी

रासोचरमरिचसमपीपलिअरुआसंगं॥ मधुसोलेहीचाटियेदुष्टछटिकोवध॥ देय॥ मोरपि
 कुंभसमकरिसहतेमेलिकेयाई॥ छटिहरणाएजोगहेकहीचतुरमनलाई॥ ८८॥ इतिछटि
 चिकित्सा॥ अथतृष्णाचिकित्सादोहा॥ सप्तधातुअरुसरितजलतप्तजुकीजेवा॥ क
 शुक्कशीतलप्याइयेतृषावतृष्णाकोरेलि॥ १००॥ चौपाई॥ वडदाठीमद्वलठीआन॥ बीलि
 कुटिकवलफलजान॥ मधुसंगगोलीमुखमैधरो॥ तृषादोषदुष्टदिनमहिहरो॥ १॥ इतिमु
 खशोषतृषाकोओषधीसमाप्ता॥ अथमूर्च्छाचिकित्सादोहा॥ विज्जआदरेपीसिकेदाष
 मुनक्कामेलि॥ तामहिसेलौशुठिटंकमधुसोचाटोभेलि॥ २॥ कासस्वासमूर्च्छाअधिकइन
 सेहोवेनासकहीविशेषज्वरवीचमैकीनीमैपरकास॥ ३॥ इतिमूर्च्छा॥ अथदाहचिकित्सा
 दोहा॥ सहसवारघृतधोइयेशीतलजलमैपेप॥ यहैदाहकोअहेहाथचरणकोले

प॥५॥ दोहा॥ कोजीसो वस्त्र भें इकरि राखौ हृदय मज्जार॥ अथ वामस्वा अमसो च दिन लेपन धारा॥ दोहा॥
बीजन की जैता डवृद्धरे भा की जैसे ज॥ शीतल जल अरु शीत घर मिटे दाह काते ज॥ ७॥ इति दाह चि
कित्सा॥ अथ मदात्पय चिकित्सा दोहा॥ धनिया दाख कपित्थ भनि दाडिम अंवली आन॥ एते योग
मद पान के मद हें तज्ञान॥ ८॥ अथ अपथ्य दोहा॥ धूम पान अरु स्वेदन स्प अंजनि घर्षण देत
कहे अपथ्य तो वृत्त सब कहै गुणी जन सेत॥ ९॥ इति मदात्पय चिकित्सा॥ १०॥ अथ उनमाद चिकित्सा
अथ ब्राह्मी गुटिका उन्मादे दोहा॥ केशर लवंग ईलाई चीत जत माल दल कूंड॥ चित्रा पीपली मरि
च ^{मोच} घन अज वाइन अरु मुंठ॥ १०॥ करहा ब्राह्मी जाई फल जावत्री शुभ आन॥ शेखा होली ते जव ल
ग ज केशर तह ठान॥ ११॥ चवक कुले जनमस की पुष्कर मूल मिलाई॥ और पीपली मूल सब
औषध सम करि पाई॥ १२॥ टंकटे कुले औषधी मृगमदमासा चार॥ सभ सम दाख मलाई येवर

वै०
५५

दमानमुखधार॥१३॥स्वेदअंगशीतांगभ्रममृगीमोहकोंदेह॥वातव्याधिउन्मादसर्ववद्दोवराही
ह॥१४॥इतिमहद्वाहीगोलीदेह॥कुंकुमकरहाजातिपत्रअथामसकीदेह॥अरुकुलज
नगंधत्रयकुंकुमादिकहीएह॥१५॥चूराणपवनत्रिदोषकोंस्वेदमोहउन्मादमृगीमूकगर्वमद
वचनइनकीयहमयीद॥१६॥इतिकुंकुमादिचूर्णआदेकेरसमादेण॥अथमाहेइतैलचोपाई
चित्रकचंदनदोनेआन॥तगरहरिद्रायुग्मवसान॥कुलथवडेवारामालीजे॥शालिपर्णीपृ
ष्ठिपर्णीदीजे॥१७॥केटफलत्रिफलापुष्करमूलगुंजावासाएरंडचूल॥आसमंधयवगोक्षुर
माष औरसारिवादशमूलजुभाष॥१८॥चवलसुपारीचलदलआनै॥अतसौऔरव
रहटीजानै॥एलुवालुशितवारिदेह॥इटसटजडसुहोजनानेह॥१९॥एरंडदोनेलालस
पेद॥ताकीजडमेंलहरामभेति॥शणकवीडचीरुदेवदार॥अपमार्गतिलश्यामजुडार

रामः
५५

पारसपीपलीप्रुभसमभादौ॥ ए औषधसंस्कृतकरिषौ॥ तिलकातेलस्तुर्गुणलीजे॥ तैमहि औ
षधकल्कादीजे॥ २१॥ सेंद अगनिसोंतेलपचाई॥ तामें औषध औररलाई॥ पीसिछाणि कै डार
गह॥ कहौ नाम औषधकालेह॥ २२॥ छुडधनीया अरु केशरमेलौ॥ सोपाकटुकी दाडिभमेलौ॥ लवेग
मजीठदालचीनीलीजे॥ अगरसंभालुपत्रजुलीजे॥ २३॥ मालतीकेतकी जाई फूल॥ अरु तुलसी
महलठीतल॥ प्रुठी भंगरामेलिकचूर॥ बीजसंभालुगठवनि पूर॥ २४॥ पवछनीरइंद्रयवले
ह॥ तजइलाई बीजाइफलदेह॥ वसुसुगेधवरावरलीजे॥ षट्गुणतत्र औषधसंदीजे॥ २५॥ ते
लमध्य औषधसंवठावह॥ भली भोतिसों माहि पचावह॥ जवनि फेन निरमलतवहोई॥ जईल
ते रोगकोंयोई॥ २६॥ दैत्यदुष्टग्रहनिवर्तनजास॥ मज्जनकियै राजावसतास॥ अतिविशे
षवलकर्त्ताहोई॥ कामप्रसन्न अतिवह्मभजोई॥ २७॥ प्रेतपिशाचराक्षस अरु भूत॥ डाकनि

शाकनीएहीदूत॥ वेंजपंगुअर्दितवेंठजान॥ भ्रममदजडतामिरगीआन॥ २४॥ कर्णनासिकाशिरका
रोग॥ अर्शप्रदव्रणनाडीयोग॥ शोफगलअहछूटीसेधि॥ अस्थिसंधिभागैकोवेंधि॥ २५॥ स्मृति
मेधाअरूदेहीजोर॥ सुंदररूपपलितनहिंघोर॥ भूतप्रेतसववसवैजाय॥ नीलवंगयहराणन
साय॥ ३०॥ कह्योवैघरसायनाह॥ रोगजानिकैमर्दनदेह॥ यहमाहेंद्रअमहेंतेल॥ अखिन
कहीवचनकीयेन॥ ३१॥ इतिमाहेंद्रतेल॥ अथअमरसुंदरिगुटिका॥ ३२॥ त्रिफलात्रिकुटा
रोगुकाचित्रकपीपरिमल॥ चातुरजातकलोहमृत्तअकरकरासमतरन॥ गंधकपूरदविषज
लदत्तामहिवाइविडंग॥ सवऔषधतेद्विगुणगुडमेनहइनकेसंग॥ ३३॥ चर्नकामानगो
लीकरैअमरसुंदरीजाम॥ श्वासकाससन्निपातसवशीतवातकेकाम॥ ३४॥ अपस्मारउन्मा
दगदऔरगुंदाभयरोग॥ पेदितकह्योविषाईकेइनकोषावाणउंग॥ ३५॥ इतिअमरसुंद

रीरसगोली॥ इति उन्मादचिकित्सा॥ अथ अपस्मारचिकित्सा दोहा॥ अतपित्तकफसन्निपात
एईचारप्रधान॥ जाकी संज्ञानाशकै सो मिरगी यह जान॥ उर्ध्वपंचकोलसैं धवमरिच अरु वि
डंग विडलौ न॥ धान्यजवनी जीरलै पपलि त्रिफला सौ न॥ ३७॥ करंज बीज वाछाल सक्त सूत
मचूरा एह॥ तमनी रसो पीजी ये वात फ्लेस हरिलेह॥ ३८॥ अपस्मार उन्माद अर्श ग्रहणी गद
कां जान॥ दीपन भूषजुन रुको क ह्यो कल्पान जु आन॥ ३९॥ इति कल्पान कचूरा॥ अथ कायः
ब्राह्मी शृंगी किरा इता पुष्कर मूल कचूर॥ दारु हलद सुरदा रूच च मोथा पीपलि मूल॥ ४०॥ अ
भया कुठ सरे सज डकर ह काथ यह आनि॥ मृगी रोग उन्माद कफ रोग विसर्वाहान॥ ४१॥ इति
काय॥ अथ नाश दोहा॥ सेहें डमा हे मरिच धरिरा यो दिन इक ईश॥ नाश जु दीजे वारि सौ शी
घ्र मृगी को सीस॥ ४२॥ लशुन हिंगु अरु व्यास सम जीरा कुठ मिलाई॥ शिथु शिला वछ मत्र

वै०
५७

शृतकरहुतैलमनभाई॥४३॥नावनदीजेनासिकाचतुरहायसुदेह॥मृगीरोगकोएकह्योशी
प्ररोगहरलेह॥४४॥इतिमृगीरोगचिकित्सासमाप्ता॥अथक्रमणिकादोहा॥अतीसारग्रहण
अरसअगनिमांघहेजान॥कहीअजीरणविसूचीकाकृमिपोडुवषान॥४५॥कमलदोषअ
ररक्तपित्तक्षयीकासअरुस्वास॥हिक्कास्वरभंगजानियैऔरअरोचकभास॥४६॥छर्दित
थाअरुमूर्छनादाहमदात्पयपाई॥भूतप्रेतउन्मादक्रममृगीरोगपुनिभाई॥४७॥पनरहकी
नेएकठत्ततीयखंडमेंआन॥औषधकीजहचूकहेतहांसुधारौजान॥४८॥इतिश्रीवाचना
चार्यश्रीसुमतिमेरुगणितछिष्यमुनिमानजीखरतरगछीयकृतभाषावैद्यविनोदनाम
निदानचिकित्सासंक्षेपसमाप्तात्ततीयखंडः॥३॥अथवातव्याधिनिदानप्रारम्भतेदोहा॥
तियप्रसंगशीताल्पलघुक्षयाप्रजागरकास॥रक्तमोक्षलेपनप्रलूनचलनपंथव्यापाम

रामः
५७

मर्मघात अतिशोकगजयान अश्ववापात ॥ वैशसधारन आमगदधात ही ए अभिघात ॥ २ ॥ क
रै विषम उपचार नर अरु चिन्ता उपवास ॥ दुष्ट होई रेचन वमन ततै पवन प्रकास ॥ ३ ॥ देह सो
त ज हरिक्त भनित हो पूरि पवमान ॥ सर्व अंग एको गले करै व्याधित ह आन ॥ ४ ॥ बहरि वाय
संकोच तन अस्थि पर्व च पुभंग ॥ पाणि पृष्ठ शिर को अहै रोम हर्ष भनि अंग ॥ ५ ॥ खंज कब्ज पोय
त्य भ्रम मोह सुप्ता गात ॥ नाश शुक्र रज गर्भ पुनि करै द्वाण सवधात ॥ ६ ॥ अंग शोष नासान
यन अश ग्रीव शिर भेद ॥ अर्त्ति तोद आक्षेप तन देह के प भनि सेद ॥ ७ ॥ लछन वाय प्रकोप
यह करै बहु त परलाप ॥ हेतु स्थान विशेष ते होई वात तन आय ॥ ८ ॥ ए लछन सव जा कि
करहु चिकित्सा जोई ॥ गुरो पदिष्ट सै जो रचै सो नर नीका होई ॥ ९ ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ पल
इक अथवा आध पल लशुन कूटि कै राख ॥ औषध यामै मेलि कै कहनाम अवभाष ॥ १० ॥ सो

चरसैंधाजराहिंगुत्रिकुट्यसमकरिमेलि॥ माषमानभक्षनकरैएरंडप्रजजलभेलि॥ ११॥ कद्यो
 एहअनुपाननरमासएकनित्तयाई॥ वातरोगअरुवकमुखअरुअपतत्रिकजाई॥ १२॥ आ
 धअंगअरुअंगसवऊरुसंभकटिपृष्ठि॥ जठरगध्रिकुमिदोषकोहरैरोगएदुष्ट॥ १३॥ इति को
 नपिंडदोहा॥ लशुनकूटिसूक्ष्मकरहृद्यतसैंषावैमेलि॥ भोजनकीजैसरसघृतवातरोग
 कोरेलि॥ १४॥ देवदारुनागरवचाजलसैंपीवैचूर्ण॥ हृदैवातकीवेदनादाणमैंनासैपूर्ण॥ १५॥
 अंठीचित्रकजैलैसहितकुक्षिवातकोषोई॥ कुटजबीजलेप्रातसमकुक्षिवातनहिहोई
 इतिकुक्षिवातकोदोईदोईजोगकहे॥ आसगंधतिलश्यामअंठीसमखेडमेलंहुआन
 घृतसैंलेहरलाईकैवातव्याधिकीहान॥ १७॥ अथचूरनदोहा॥ पीपलिचित्राअंठीसमच
 वककैलौजीपाई॥ अजवाइनजडपीपलीआसगंधदेहरलाई॥ १८॥ अकरकराविडं

गसमगुडसोंगोलीयाई। टंक एक परमानकी असीवात सव जाई। १९। मुंडी भंगरा भंगसम-
मेलि संमालु आन। चूरन दीजै टंक दुई वात व्याधिकी हान। २०। इति वायको चूर्ण अथ काय
दोहा। एरंड विप्र्वारासना देवदारु गिलोई। काय जु करि कै पीजीये पीडा वायन होई। २१। ल
दु अुन कूटि गो धूसै करहु दीरमन लाई। हाड पीड अंग कड हि शीत वात न रह्यो। २२। अ
थ तेल कायको दोहा। तेल तिलों का सेर इक अरु धतूर रस मेलि। बीज धतूर गुंजा जहर
टंक पंचयह भेलि। २३। करहु तेल विधिसों चतुर अरु निफेन दै जाई। ताको मर्दन की
जीये वात रोग न रह्यो। २४। अथ त्रयोदशोग गुग्गुलु दोहा। आस गंध की करिह पुष्प
लासों फ गिलोई। भसडा शटी शतावरी अरु निशोत सम होई। २५। अंठी जवाई ना एक सम
तामै गुग्गुलु देई। घृत सोंगोली की जीये अनुपान सों लेई। २६। यूषमद्य को सम जल दूध

गाईकाहोई॥ अनूपानसवाकहेचठेहजोकोई॥ २७॥ कटिग्रहगुध्रसिवाहृष्टहृष्टनृयहजा
नृपाई॥ संधिअस्थिकोंवाइग्रहमज्जस्तायुगतजाइ॥ २८॥ कोठवातकरुद्धदुखहृदैरोगकै
जास॥ खजवातअरुहाडभंगइतेरोगकानाश॥ २९॥ त्रयोदशोगगुगुलकह्योचतुरपेदिता
ह॥ रहैपण्यत्रयमसकलतवषाणोंकोदेह॥ ३०॥ इतित्रयोदशोगगुगुलुवातविकारे॥ अथ
नारायणतैलकवित्त॥ ३१॥ पाटलाकंडारीस्थूलभूतवृक्षअग्निमंथशालिपर्णीपीठप
र्णीपारिमद्रसानिये॥ राजवलाअश्वगंधाक्षरकअरणीविल्वऔरवलाअतिवलानौतनवषा
निये॥ दशयलभिन्नभिन्नकरिलीजैएकठौरचारडोणजलबीचकाथद्रव्यठानिये॥ रहैज
वाकडोणअगनीउत्तारिराखौप्रातहीनिकालिकरिदठवस्त्रछानिये॥ ३२॥ पुनःकवित्तअ
तामैमैचौचारप्रस्थतिलहंकातेललेहसितावरिकौरससमस्नेहमैधरीबीये॥ औरहेमि

लाई दूध धेनु अजादीर कहै चौगुनार नाष्टे लाए के ठौर की जीये ॥ तमैं दी जै द्वे द्वे पल औ
षधी सवारिकल्क चतुरसुधारि वैद्य विधि सों पची जीये ॥ डारिये जु डव्य दश घट हं कौनो स
सुनो और हं सुगंध भेलि तैल मांही दी जीये ॥ ३२ ॥ पुनः कवित्त ३१ ॥ राइ सेन आस गंध देव दा
रुशस पुष्पा जे दन तगर छुड शुद्ध कै डलाइ देह ॥ माषपर्णी मुद्गपर्णी शालिपर्णी और हं छ
लीरा भेलि सुगंधिर लाइ दे ॥ धरौ वीच संधालून इट सटने जमान मोलमी वर चडाली
दावी सार लाइ दे ॥ सिद्ध भयो तैल जव जल वीच शोषि गयो तब ही उता रिभ मिदेह कौमला
इ दे ॥ ३३ ॥ पुनः कवित्त ३१ ॥ अधो भाग वात कोप मध्यगत शीश रोग मन्यास्तं भहनु सं
गल ग्रह दोष है ॥ वधिर वृषाण शोथ अत्र वृद्ध रुद्र रोग नष्ट शुक्र क्षीण ज्वर ताहि नर पो
ष है ॥ देत रोग मंद बुद्धि अर्द्धित पवन गदितिय जो न गर्भ धरै ताहि कौ संशय है ॥ वाय से

ती। भग्न हयनर देहवात दुखी और रोग कहैं सब इन सौ नरोष है ॥ ३५ ॥ पुनः ज्वित्त ३॥ स्वास
 भ्रमरक्त पित्त दंत शूल कृमि रोग सूर्यो वर्ते दाह गद अक्षि शूल परै है ॥ सधि गंतत अस्थि
 मज्जा अंग के पुपक्ष घात कटि पीठ मृगी रोग सब नि सौ नर है ॥ क्षयी शोष उन माद मेद भ्रू
 जा की अति पेट ही में सब अन्न शीघ्र मोंदी जरै है ॥ एई है प्रभाव या में समाज चतुर देह का
 मरूप करै एह एई रोग हरै है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ यह कह्यो नारायणी तैल महा वल वेत्त ॥ मर्दन ही
 ते होई शुभ कहै गुनी जन संत ॥ ३६ ॥ इति नारायणी तैल ॥ अथ विसर्ग गर्भ तैल दोहा ॥ वचा
 कुठ शतावरी पुष्कर लशुन विडंग ॥ देवदारु अज मोद विषट्क मूल मेत हसंग ॥ ३७ ॥
 आसंग ध्वज अज मोद शिग्रु श्रुंठी हलद पिनी ई ॥ सेभाल जडवानरी हरद सौं फहु हदो
 ३८ ॥ सो ए पीपली मूल सम अरु प्रसारनी आन ॥ राइ सेन पाठ मरिच वला विशाल ज

डजाल ॥ ३८ ॥ पलपलली जै औषधी पाई औ गुनानीर ॥ मंद अगनि सों काय करिले हरा
ण वसुधीर ॥ ४० ॥ तामहि मेनो तैल प्रस्थ प्रस्थ लेहु एरंड ॥ सरसों भंगुर अर्करस प्रस्थ अ
स्थ लेवेड ॥ ४१ ॥ तामहि गोमय सरस पल विषदी जै बीच ॥ निरमल अरु निःफेन हु
ईराषही वासन सीच ॥ ४२ ॥ मर्दन करी ये दोष जहवात रोग सेधिवाई ॥ कटि त्रिकपीडा
पीठ ग्रह प्रक्षालन सव जाई ॥ ४३ ॥ अंग के पदारण कुवल अरु होवै अडंग ॥ धनुष वात
अरु अध्रसी सन्निपात कहि संग ॥ ४४ ॥ नाम राशि शशी जोग शुभ तामहि मर्दन तैल ॥
नाम धरौ विसगर्भ एपवन चौराशी रेल ॥ ४५ ॥ इति विसगर्भ तैल ॥ अथ वात सेद दोह
कठ पुह करदारु शुठी शत पुष्पा एरंड ॥ आभाते जवती त्रिकटुरा इमेन लेमंड ॥ ४६ ॥ आ
सगंध इट सट जटा अथिक भारी लेह ॥ अथ पलली जै औषधी लादी आठ कदेह ॥ ४७ ॥

वै०
६१

अग्नियोगमूर्छितकरैतामें औषधमेनि ताको करियै सेदत न अशीवायकोरेलि ॥ ४८ ॥ वा
हपृष्ठशिरकटिग्रहणपक्षाघात अपतान ॥ मन्यासंभ अर्हितसकलगृध्रसेदहेजान ॥ ४९ ॥
इतिलाक्षादिसेदः ॥ अथपंचवायसेदकथनदोहा ॥ धरैजुवायशरीरको आयुवर्णवहप्रा
ण ॥ तात्तैवायुजगमें प्रभुकहैंसभेसुरूपान ॥ ५० ॥ अथपंचवायनामकथनदोहा ॥ प्राणोदा
नसमानपुनिव्यानअपानहैपंच ॥ स्थानकहेजुविचारिकछुसमजिपरैजुरंच ॥ ५१ ॥ कंठ
जीभअरुनासिकाउदानवायकास्थान ॥ सेदअबुनाडीचलैकरैकर्मयहजान ॥ ५२ ॥ द
धाचपलअरुप्रवलवलनकरैवायसामान ॥ व्यापकदेहीशीघ्रगतिकहेबाहिक्वोव्या
न ॥ ५३ ॥ अगचालअरुनासाजुउरमसकस्थानहैप्राण ॥ स्वासआहारउदागारकर्म
वनदोषयुप्रमान ॥ ५४ ॥ कंठजीभअरुनास्यमुखअक्षिकर्मजेहोई ॥ संकोचप्रसारण

रामः
६१

मानके यहै कर्म कहि जोई ॥ ५५ ॥ वृषाणवसिं अरु मेरु उर गुदानाभि अस्थान ॥ सूत्र सूत्र ॥
मलप्रवतिण करै कर्म कहि जान ॥ ५६ ॥ जहो जहो पीडा रहै तहो तहो देहस्थान ॥ ताको सु ॥
रिये नाम यह करीये ताको ज्ञान ॥ ५७ ॥ इति पंचवायस्थान कहे ॥ श्लोक ॥ अभ्यंग स्नेह सेव
द्यैर्वातलोयो नशाम्यति ॥ विकारस्तत्र विज्ञेयो दुष्टमात्रास्ति शोणितमिति ॥ ५८ ॥ उक्तं च सुश्रु
ते ॥ इति वातवाधिचिकित्सा ॥ अथ अर्दितचिकित्सा दोहा ॥ कल्फजुकी जैल शुन कौताम
हि मे लोत्तेल ॥ परभाते भक्षन करौ तुरत तमा सपेल ॥ ५९ ॥ अथ गृध्रसीचिकित्सा दोहा ॥ व
डे नीव कामूल ले जल सौपी वैपीसि ॥ दास्या जावै गृध्रसी दिन मरया दावीस ॥ ६० ॥ इति
गृध्रसीचिकित्सा ॥ अथ वातरक्तनिदान कथन दोहा ॥ स्निग्ध आम्ल कटु क्षार पदु उ
ष्ण अजीर्ण षाई ॥ सटित मोस जषत क्रदधि माष सुरास वभाई ॥ ६१ ॥ नीरात्रिनिद्रादि

वै०
६२

वसविरुद्धाध्यसनीहोई॥पलनइच्छुशाकादिसवकुलतयमोठपुनिजोरी॥६३॥स्यलसुखी
सुकुमारसवमिष्याहारविहार॥कोपकरैशोणितपवनऔरशुक्तिआरनाल॥६४॥इतिनि
दानं॥अथचिकित्सादोहा॥रसगिलोईअथचूर्णकरिअथवाकीजैकाय॥सेवेदिनइक
बीसतकहोईपथ्यजोसाथ॥६५॥अथमंजिष्टादिकायः॥दोहा॥कइहलददेवदास्वचत्रि
फलानीवमंजीठ॥छिन्नरुहामहिमेलियैकरिकाठागुरुदीठ॥६६॥वातरक्तमंडलरक्तपा
मकुष्ठनेत्ररोग॥मंजिष्टादिककायलघुअरुकपालिकाजोग॥६७॥इतिलघुमंजिष्टादि॥अ
थवृद्धिमंजिष्टादिकायः॥दोहा॥मोषगिलोईमंजीठवचनीवनिशाद्वयआम॥मुंठीकुठ
त्रिफलाकुटजपीपलिवित्रकजान॥६८॥वासाभार्गीइंद्रयवमूर्वाकइविडंग॥विजैसा
रचेदत्ततिवीपटोलपत्रदेसंग॥६९॥भैरवराजसितावरीवृद्धदास्राहिमान॥पायवाकु

रामः
६२

चिसारिद्वारवराकरंजवधान॥ ६८॥ आमलतासंपत्तीसंजसुपित्तपापडामेलि॥ औरजवराज
सजडकृतमालकसमभेलि॥ ७०॥ पीपलिआरकिराइतापारिभद्रअधरोटे॥ एतेओषधएव
मकरहकायकाजोट॥ ७१॥ प्रतीवासगुग्गुलुकणपीवहुसाथरलाई॥ देहुअठारहकोठकोव
तरकतमिटिजाई॥ ७२॥ मेददोषश्लीषदचरणउपदेशपक्षाघात॥ नेत्ररोगकोशस्तहेवृ
द्धमंजिष्ठायात॥ ७३॥ इतिवृद्धमंजिष्ठादिकायःचोपाई॥ वासाअरतूअवरगिलोई॥ तीनो
समकरिकाठाहोई॥ एरंडतेलसेगप्रातहिवाई॥ वातरक्तसमतनकीजाई॥ ७४॥ इतिवा
तरक्तचिकित्सा॥ अथऊरुसंभचिकित्सादोहा॥ देवदारुएरंडशुंठीरास्नामेलिगिलोई
कायअस्थिसर्वांगसंधिराखापंचकहोई॥ ७५॥ एरंडभषडारासनादेवदारुगिलोई॥ आ
मलतासपुनर्नवाएतेसप्तकहोई॥ ७६॥ कायदेहुनागरयुगतजेघपाश्र्वेजिकआन॥ वस्ति

मूल अरु ऊरु यह नरासनासप्तक जानें ॥ ७७ ॥ इति ऊरुस्तभं चिकित्सा ॥ अथ आमवात चिकि
 त्सा ॥ अथ अजमोदादि चूर्णौ चोपाई ॥ मरिचं पीपलीं लिवाइ विडंग ॥ देवदारु अजमोद निसंज
 चित्रक सेंधा पीपली मूल ॥ शोफर लाई करो समतल ॥ ७८ ॥ कहे जु औषध न वपल लीजै ॥
 तामें सुंठी जु दशपल दीजै ॥ देह विधारा दशपल आन ॥ वडी हरड दशपल जु मान ॥ ७९ ॥ पंच
 वाई रोग दारुण जो होई ॥ ताको दूरि करै पुनिसोई ॥ कटि अरु वस्ति गुदा वह फूटै ॥ जेघ अ
 स्थि वह धापुनि दूटै ॥ ८० ॥ आमवात मिलि संधी युजानौ ॥ वह तशोज पुनि अंग वयानौ ॥ च
 रण अथ वा गुटिका कीजै ॥ नाम एह अजमोदादि कहीजै ॥ ८१ ॥ इति अजमोदादि चूर्णो दो
 हा ॥ हिं गुच वक विडंगुं ठिकण जीरा पुनः कर मूल ॥ भागोत्तर चूरण करौ आमवात को व
 र ॥ ८२ ॥ सुंठी के ड्यारी पापरै पाठ अभ्यासि ॥ गजपीपली मोषा ऊरण पीपली जडु भलि

मित्र ॥ ८३ ॥ ए औषध समं पीसि कैत पनोर गोलें ह ॥ आमवात की वेदना सो सीधो सिरे ह ॥ ८४ ॥
जाको रुचि नहि अन्न की ताको भूष करे ॥ जाके फीहा पेट महिता को तुरंत हरे ॥ ८५ ॥ इति आ
मवात को चूर्ण दोहा ॥ हर डै मुंठी विडंग सम देवदारु मधि आन ॥ तप्तोदक सो पीजे ये आम
वात को हान ॥ ८६ ॥ ए रंडति वीपती स समदारु निशाजु विडंग ॥ मरिच डेंद्र्य व आनि कै राबो
सब सम संग ॥ ८७ ॥ चूरा पीजे उष्ण जल आमवात है जास ॥ कृमि की पीडा उदर दुख होई
इन्है का नाश ॥ ८८ ॥ इति आमवात चूर्ण दोहा ॥ गुग्गुलु हरड गिलोई सम निशादाल इ
ट साट ॥ धेनु मूत्र सो काप देय है शो जको काट ॥ ८९ ॥ इति आमवात को काप ॥ अथ योग
राज गुग्गुलु कथने चौपाई ॥ चित्रक पीपली मूल जवानी ॥ शौफ विडंग अजमोद जवानी
जीरक गोक्षुर धनीया आनौ ॥ देवदारु अरु चवक वषानी ॥ ९० ॥ त्रिफला मेषारा स्नाती जे

वे ७
६४

सैंधवालाहठमहिदीजै॥तालीसत्रिकुटांअरुदालचीनी॥तमालपत्रयवायारमहिदीनी॥
ओषधपीसिचूर्णसमकीजै॥तामैगुग्गुलुवरावरदीजै॥घृतसोंकूटोदिनदोइचार॥स्निग्ध
गधभांडमैरायौधार॥८२॥वलेदेयीनैमात्रादेहु॥यथाहारयावोनराह॥आमवातअरुपव
नचौरासी॥त्राणकृमिकुष्टअरुसकौनासी॥८३॥उदरआनाहगुल्मकौठैले॥दीप्तिअगोनि
कौजोरैमैले॥तेजवृद्धिवलजाकौहोई॥संधिमज्जकावायसवषोई॥८४॥वायरोगकाएहै
काम॥धर्योयोगराजनाम॥इनरोगनकोअमृतहैएह॥रोगविचारिकरैतवदेह॥८५॥
इतियोगराजगुग्गुलु॥इतिआमवातचिकित्सासमाप्ता॥अथअल्लकाराकथनदोहा
शीतलजलअतिपानतैमैपुनअतिअभिघात॥पानप्रजागरहास्यअतिवायरोधवपुव
त॥८६॥संधारणविटमूत्रभानिपुक्रोरोधउपवास॥अन्नविरुद्धअुष्कश॥अपुनिअरुवि

वाम
६४

रूठ यह भास ॥ ८७ ॥ कोरदूष आठ के मटर हिंदल मंग के हिले ॥ पठे पाठ अशिरोक चित्ती ॥
गा के सैली होई ॥ ८८ ॥ इन तै वाय प्रकोप बहु करे मूल नर जास ॥ स्निग्ध उष्ण भोजन विमल
मर्दन सेव विनाश ॥ ८९ ॥ इति मूल निदाने ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ सोचर पुष्कर मुंठ हिंगु
सम करि जोग मिलाई ॥ पीसि पीये जल तप्त सो मूल विसृची जाई ॥ ९० ॥ अथ रस जर्पात्त दो
मुंठ हिंगु जीरामरि चत्ता महिवर च मिलाई ॥ तप्तोदक सो पीये पेट मूल न सि जाई ॥ ९१ ॥ अ
थ वैद्य जीवने दोहा ॥ मुंठ जुली जै पंच टेक कण मे लि सत टेक ॥ चार टेक अज मोद पुमि
है अज वाइन अंक ॥ २ ॥ तामें सोचर टेक इक सब सम हर ह मि लाई ॥ पेट अफारा मूल गु
ल्म आम वात मिटि जाई ॥ ३ ॥ अथ हिंगु वायु कचूर दोहा ॥ मुंठ हिंगु संधामरि च पी परि जी
र दोई ॥ अज मोद जल तप्त सो कवही मूल न होई ॥ ४ ॥ सोचर ति वी हरीत की पी परि मुंठी स

मान॥ तप्तोदकसोपीजीयेनाशशूलकाजान॥ ५॥ सज्जीपीपरिमरिचअंठिसंभकरिताहिमिला
इ॥ जलसोपीजीपीसिकरतुरतशूलमिटजाइ॥ ६॥ शोषचूनसंधामरिचअंठीहिंगुसममेलि
पीपलिचूरनतप्तजलत्रिदोषशूलकोरेलि॥ ७॥ तीनलवनयववारहिंगुअभयातामहिच
रा॥ वाइविडेगजवाइनीतुवरूपकरमूल॥ ८॥ एऔषधसमलोजीयेटेकटेकपरमान॥ ९॥
वीलीजेटेकत्रयचूरनकरीयेजान॥ १०॥ तप्तनीरसोपीजीयेटेकदोईपरमान॥ आमवातआ
धानगदशूलगुल्मकफहान॥ ११॥ इतितुंवरादिचूरण॥ सोरठा॥ संधाहिंगुहिलोइ॥ उष्म
जलसोशूलहर॥ सोचरसोहिंगुषाड॥ दोइजोगकहिशूलके॥ १२॥ अथलेपदोहा॥ लवण
कल्मरीकौडसममुखवरवायविडेग॥ औरकपीलामैणफलसवचूरनकरिसंग॥ १३॥ ना
भिहेठजललेपदेकरीएकद्वैवार॥ पेटअफाराशूलगदमूत्रबंधकोटा॥ १४॥ इतिशूल

लेप॥ इति शूलचिकित्सा समाप्ता॥ अथ उदावर्तचिकित्सा दोहा॥ त्रिकटादंतीतमसि समचित्रक
पीपलिमूल॥ गुडसोंगोलीवांधीयेमुखमेंमेलेपूर॥ १४॥ अगनिवठावनवलकरशोण्य उदाव
र्त रोग॥ एहगुडा एकनामकही उत्तम कहिये जाग॥ १५॥ इति गुडा एक उदावर्तको॥ इति उदाव
र्तचिकित्सा॥ अथ अनाहचिकित्सा दोहा॥ वचाहिं गुजाजीहरडकुठपुहकसुनं॥ वाइवि
डेगनागरयथा उत्तरोत्तरपूर॥ १६॥ पेटअफारा गुल्मसीह उदावर्त आनाह॥ और विसृचीरो
गहै कहै अवैहमजाह॥ १७॥ इति आनाहचिकित्सा॥ अथ गुल्मस्यानपंचकपन दोहा॥ स्या
नपंचरुदिनाभि त्रयहृदयनाभि मध्यभाग॥ पंचम कहिये पार्श्वग्रंथिरूप गुल्म कहि माग॥ १८॥
अथ कारणा दोहा॥ रूक्ष अन्न अभिघात शुक्क मल दायनिग्रह वेग॥ पान विषम मात्रा अधिक
अनल गुल्म उद्देग॥ १९॥ अथ गुल्मचिकित्सा दोहा॥ यवाधारसैधवहरड अजवाइन वचमे

॥ ५० ॥
॥ ५० ॥

लि॥ आमलवेतसहिगुसम॥ चूरनकीजेमेलि॥ २०॥ तमनीरसेपीजीयेगुल्मप्रूलहेजास॥ इचि
करजानोचूरनपहकरैरोगकानाश॥ २१॥ इतिवचादिचूर्ण॥ अथक्षारविधिगुल्मप्रूलकोचौ
पाई॥ अणीकठकंडारीदाई॥ लौनअवागचित्रकहोई॥ आकभिलावकेसुवेले॥ सेहेंडंनोव
वकायनमेले॥ २२॥ वासापाडलपुष्करमूल॥ बालसुहांजनमेलेतल॥ सवैजोलाइरावकरहे
ह॥ पाइसुनीरचुवावहाह॥ २३॥ हीगरलाईवारकोयाई॥ गुल्मउदरदुखफीहाजाई॥ कह्यो
योगशान्ताहविचार॥ कीजेआयधपरउपकार॥ २४॥ इतिक्षारपुन॥ चौपाई॥ संधात्रिकुटा
चवकविहाल॥ करंजपातचित्रकसमघाल॥ सवजलाईमठासंगयाई॥ गुल्मउदरभूष
प्रूलमसाई॥ २५॥ इतिगुल्मप्रवासपोडुरोगकोक्षार॥ अथचूरनचौपाई॥ जीरासेंधाईसंपेद
बीज॥ चूरनकरकेटेकइकलीज॥ तक्रमिलाईसकारेयाई॥ गुल्मरागवह॥ नफाजाई॥ २६॥

५०६३

गमः
॥ ५० ॥

इतिगुल्मचिकित्सा॥ अथेहद्रोगचिकित्साश्लोकः॥ अतुष्मगुर्व्यम्लकषाभित्तश्रमाभि
घाताध्यशनप्रसंगैः॥ सचित्तैर्तेर्वगविधारणोऽप्रहृदामयः पंचविधः प्रदिष्टः॥ २१॥ अथचि
कित्सादोहा॥ पीपलिमूलईलाईचीघृतसोर्षोवैचूर्ण॥ हृदयरोगअरुगुल्मदुष्मनाशहो
इयहर्तुर्ण॥ २२॥ कुंकुमगेहृच्छागपयगोघृतकरिष्यपक्क॥ शितासहिजोमाईसोहृदैरह
नकोसक॥ २३॥ श्लोकः॥ नागरेपिवेदुस्मंकषायंचाग्निवर्द्धने॥ कासश्वासानिलहरंश्च
लहृद्रोगनाशनं॥ २४॥ अंठीजवानीलशुनहरीतकीकुष्ठचक्रस्तुवरश्चुष्कमाद्रिकं॥ सो
वीरशुक्लमधुवाराणीरसः कस्तूरिकाचंदनकंप्रयानकं॥ तौबलमप्येषगाणः सखाभवे
न्मत्तस्यहृद्रोगनिपीडितात्मनः॥ २५॥ इतिहृद्रोगचिकित्सा॥ अथमूत्रकृच्छ्रहेतुकष
नदोहा॥ तीक्ष्णशौषधरूक्षश्रमनृत्पृष्टदुत्थान॥ होतअजीर्णअरुअध्यसनम

वै.
६७

त्स्य रूपमद्यपान ॥ ३३ ॥ मूत्रकृच्छ्रकाहेतु यह अरु कोपै मलतीन ॥ मूत्रमार्ग बाँडा अधिक दे
ह होत है दीन ॥ ३४ ॥ वस्ति मेरु बदाण सरु के स्वल्प मूत्र वह वात ॥ रक्त दाह कृच्छ्र पीत रुज
पित्त कृच्छ्र मुहु जात ॥ ३५ ॥ वस्ति लिंग गुरु शोथ रुज मूत्र कृच्छ्र कफ होई ॥ सर्व रूप सन्नि
पात के अधिक कृच्छ्र है सोई ॥ ३६ ॥ इति मूत्रकृच्छ्र निदाने ॥ अथ मूत्रघात कथन दोहा
मूत्रघात ते रह विषम दोष तीन सै जान ॥ वात के डली आदि दे जानि लेह सुरग्यान ॥ ३७ ॥ लछ
न माधव मै के हेत हो देखि कै लेह ॥ कं ह्यो न जाई विस्तर ईता हो वठै ग्रंथ का देह ॥ ३८ ॥ अथ
पथरी लछ न दोहा ॥ वात पित्त कफ शुक्र भनि प्राय स्नेह अ अधिकार ॥ उपमा यम है अस्म
री औषध ताहि विचार ॥ ३९ ॥ इति निदाने अथ चिकित्सा दोहा ॥ अस्म भेद शमा कदम्ब का
स गोष रुयाम ॥ मधु संग चाटौ अशमरी मूत्रकृच्छ्र का नाश ॥ ४० ॥ नागर धात्री ॥ भर आसरी

रामः
६७

धगिलाई वातरोगकोंबोयाभूत्रकृच्छ्रकोंबोई॥४१॥ इति अमृतादिकायः दोहा॥ किरमाला
गोदूरहरडदृषदभेदधन्वयास॥ माहिकसेतीकायदेदाहकृच्छ्रवेधनाश॥४२॥ इति पित्त।
मूत्रकृच्छ्रकायः दोहा॥ शित्तादायकाकल्ककरिषाईकृच्छ्रमधुयोग॥ लोहचूर्नमधुसायले
नाशकृच्छ्रकारोग॥४३॥ शित्तातुल्ययवसारभनिमूत्रकृच्छ्रकोंदेह॥ बीजकर्कटीशर्करामूत्रकृच्छ्र
कोंलेह॥४४॥ अथ एलादिकायपथरीमूत्रकृच्छ्रकोंऔषधदोहा॥ रसकंद्यारीआनकैपीवैक
द्रीलाग॥ अथ वामधुकेसायदेनाशहोईकृच्छ्ररोग॥४५॥ एलावासारोणुकापीपलीहरडैपाई
महलठीअरुगोषरूपाहनभेदभिलाई॥४६॥ काठाकरिकैदीजीयेसिताशिलाजितुधारि॥
मूत्रकृच्छ्रअरूपथरीपीवत्तपीडाटारि॥४७॥ शिलाजीतुपीपलिदृषदभेदवहत्तसमआन
गुडसेग्रहरेजुमूत्रकृच्छ्रअथजलेतुदलपान॥४८॥ अथ कवित्त३१॥ अग्निदेअनारदाने

ये
इष्ट

त्रिकटुजरानि शिचवकजवानी धान्यपीपलिमिलाईये॥ नागरविडंगालू ^{मोया} मेघनादतित्ति
डीसों जलसे तीपीसिकरि घृतमें रलाईये॥ कहि मान घृत प्रस्थ विधि सों पचावे वैद्य सिद्धि की
ये पान पान मात्रा हि सिलाईये॥ बीसे मेह मूत्रघात पथरी सकृद्वरोग कामला विवेधना हृग
दकों हटाईये॥ ४४॥ दोहा॥ यह दाडिम घृत मूल हर और रोग सब जाहि॥ पंडित कह्यो विचा
रिकै इन सम औषध नोहि॥ ४५॥ इति दाडिमादि घृत योग रत्नावली सों कहा॥ इति मूत्रकृच्छ्र
त्रघात पथरी चिकित्सा॥ अथ प्रमेह निदान दोहा॥ स्वप्न दिवस वैठवहुत नवा अथान्न पय
पान॥ ग्राम्य उदक दधि आनूप रस निमित्त मेह यह जान॥ ४६॥ श्लेष्मा के दश साध्य हेया प्य
कहेषु पित्त॥ पवन चार असाध्य है कहि चतुर नरथित॥ ४७॥ सम करिया कफ की कहत
कष्ट किया पित्त जान॥ दुष्ट होई हेवात की करै तु होई हेरान॥ ४८॥ अथ बीज प्रमेह नाम क

राम
इष्ट

यन दोहा ॥ इक्षु साद्रक मेही सुरं स्वतः शुक्र रजः पीत ॥ मेदं मेदला लायुत तं तु दारक हिमीत ॥ ५४ ॥
नीलकालं मे जिहृति शिरः कृत हस्ति वसामे ॥ गज्जा अरु दोद्रा भमनि वीस मे हं कहिं ॥ ५५ ॥ इति
नामक यन दोहा ॥ हृदय गुदा शिरः अंग मुख पृष्ठ मर्म पीडि होई ॥ अगनि मेद दुर्वल विषम नाहि न डो
ष धकोई ॥ ५६ ॥ इनके लछन समजि कै करहु चिकित्सा जान ॥ इनमें के इक्षु अति घोर असा
ध्य पहि चान ॥ ५७ ॥ इति निदाने ॥ अथ चिकित्सा दोहा ॥ वडी इला इची खंड सम चूरन टंक इक ले
ह ॥ भोजन कीजे पण्य कौ कहा करै परमेह ॥ ५८ ॥ कत्य स्वतदा डिम कली महल ठी सम खंड ॥ च
नली जे टंक हेलै परमेह विहेड ॥ ५९ ॥ शिला जीतु अरु एल चीश या होली पाई ॥ सब औषधं सम
खंड ले शीतल जल सोयाई ॥ ६० ॥ मूत्र कृच्छ्र अरु पत्यरी मूत्र वेध दै जाई ॥ यह विशेष गुण याहि
में सत्र प्रमेह मिटि जाई ॥ ६१ ॥ अथ चंद्र प्रभा गुटिका शाई धरात दोहा ॥ वचा मुसदेव दारु चव

त्रिफलात्रिकचूर॥ गजपीपलिधनीयाहलदत्रिकटार्पीपलिमूल॥ ६२॥ अतिविषदर्वीचार
द्वयतीनजुलवणविडंग॥ सोवनमाषीभस्मकरिऔरकिराइतासंग॥ ६३॥ टंकटंकसलीजी
येकीजेयहपरमान॥ त्वचापत्रएलातिवीरोचनवंशजुठान॥ ६४॥ कर्षकर्षदंतीववहुकरिच
रनसबआन॥ दोईकर्षहतलोहपुनिचारिकर्षसितजान॥ ६५॥ कर्षआठशिलाजीतधरिगु
गुलुलेअठकर्ष॥ चूरनकूटोमेलिसवकरहुगोटिकाहर्ष॥ ६६॥ गोलीकरिटंकचारकी
नितप्रतिषावैएक॥ मूत्रकृष्णरुअस्मरीमूत्रघातकौछेक॥ ६७॥ शूलग्रंथआनाहवेध
मेहनवीसप्रमेह॥ पांडुकामलाअठवृद्धरकसाअर्बुदलेह॥ ६८॥ काससासअंत्रंवृद्धक
टिप्प्रीहहलीमकजास॥ दंतउदरतियरजरुजाकुष्ठभगंदरनाश॥ ६९॥ शुक्रपुंसगतनयन
गदबायुपित्तकफजान॥ जाहिअरुचिमंदगिनपुनिवृष्णरसायनजान॥ ७०॥ सात्रादीजे

रामः
६६

दक्षिवलचंद्रप्रभायहमेष॥ शरंधरमैकहोयंयनिसंवकीसाय॥ ७१॥ इतिचंद्रप्रभागेली॥
दोहा॥ अरुणत्रिफलाक्षरद्वयलवणतीनचव्याल॥ पुहकरवायविडंगचित्रंगजपीपली
महिमेला॥ ७२॥ निशादोइहैसारिवाश्रुगीकेसरनाग॥ सोवनमाषीमोयदीप्पसवसमकरि
येभाग॥ ७३॥ सवसमदीजैलोहरजशिलाजीतसमदेह॥ गुग्गुलुमेलौलोहसमकरहुगो
टिकाएह॥ ७४॥ मात्राषावैएकपिचुमधुसंगषाईरलाई॥ चंद्रप्रभाकेरोगसवइनसेवनसैजा
ई॥ ७५॥ इतिचंद्रप्रभाअरुणगुटिकादोहा॥ एरंडवासाएलचीपीसहुतुल्यमिलाई॥ दक्षिणे
दोजेप्रातऊठिमूत्रकृष्मिटिजाई॥ ७६॥ लैचूहेकींमोगणीतातेजलसोपीस॥ नाभितलैले
पनकरहुमूत्ररोधनहिंदोस॥ ७७॥ त्रिफलासंधागोबरूबीजकर्कटीआन॥ तसेनीरसोपी
जीयेमूत्ररोधकीहान॥ ७८॥ अथपत्यरीकायः दोहा॥ वारुणशुठीगोबरूकायकरोसव

मेलि॥ पावहगुडयवधारपुनिवातपत्थरीरेलि॥ ७८॥ अथप्रमेहअपथ्यकथनदोहा॥ धूमपानमोच
णारक्तसेदमधुरअन्नयाई॥ मेषुनघृतगुडहीरफुकसुरातैलइक्षुयाई॥ ७९॥ स्वादुलवणक
याडदुष्टअंबुमिठाईजान॥ अशनविह्वसौवीरपुनिअभिष्यदवस्तुमलान॥ ८०॥ अनप
मासनिष्पावभनिमूत्रवेगइनमोहि॥ वर्जितएहप्रमेहकोंइनकोंसेवैनाहि॥ ८१॥ इतिप्रमेहअ
पथ्य॥ इतिमूत्रकृच्छ्रपथरीप्रमेहचिकित्सासमाप्ता॥ अथमेदचिकित्सादोहा॥ त्रिकुटात्रिफला
मोथचित्रगुगुलुवायविडंग॥ कफमेदीजोवाधिहईकरैतासुंकोभंग॥ ८२॥ मधुजलसेवेनि
त्यदिनमेदस्पृलताहोई॥ रहैपथ्यभोगीपुरुषस्पृलदेहकोंयोई॥ ८३॥ इतिमेदचिकित्सा॥ अ
थउदरचिकित्सादोहा॥ त्रिकुटासंधाजोरपुनिअजवाइनसोंमेलि॥ ८४॥ देहचूर्णतक्रसाथ
सोंशोफउदरकोरेलि॥ ८५॥ पागदंतीकुठवचतीनलूनयवसार॥ जीराहिंगुअजवाइनी॥

रामः

सज्जीवित्रकधार॥ ८६॥ शुष्कीचवकसमचूर्णकरिउष्मजुजलसोदेई॥ वातोदरजो रोगहेतु
कोनाशकरेई॥ ८७॥ करैजवीजइंद्रवासाणीमूलीबीजरलाई॥ शंखभस्मकोजीसहितपीत
जलोदरजाई॥ ८८॥ माहिषजलअरुउष्टुपयमूत्रधेनुकापान॥ करैनभोजनउदरगदपीये
एहपरधान॥ ८९॥ धेनुमूत्रसवतैअधिकवालवृद्धकोदेई॥ उदररोगअरुशोथसबइनका
नाशकरेई॥ ९०॥ दंतीतिवीअरुशंखिनीनीलीत्रिफलारात॥ वाइविडंगकंपिह्नसमइंद्रवा
हनीघात॥ ९१॥ इनकाचूर्णएककरिटंकएकसमदेई॥ गोनरकह्योप्रशस्तसबउदरव्याधि
नाशेई॥ ९२॥ इटसटदर्वीहरडसमतामहिछिन्नामेनि॥ पीवहुमाहिषमूत्रसोत्वचादोषको
पेलि॥ ९३॥ उदरशोथअरुपोडुकफमुखप्रसेकहेजास॥ देहशूलताहोईजौकरैतासकोनाश
९४॥ अथकायदोहा॥ इटसटनिवपटोलशुष्कीकटुकीप्रमथगिलाई॥ दर्वीसमलेकाथकरि

उदरशोथनहिंजोई ॥ ४५ ॥ कासशूलसर्वोगपुनिशूलस्वाससंयुक्त ॥ कह्योहोइरोगकोकरै
 तासुकोमुक्त ॥ ४६ ॥ अथवृद्धनारायणीचूर्णकवित्त ॥ जीरकत्रिफलावचात्रिकटुहपुषधान्य
 कठशटीअजमोदस्थूलजीरदीजीये ॥ चित्रकविडंगवायुअजगेधाशतपुष्यावीरजटापुं
 चलूनदोइयारदीजीये ॥ दीपनीमिलाइकटुयथिसवप्रत्याहारचूकंधरिउनतीशमात्रा
 समकीजीये ॥ दुद्रफलादोईभागत्तवृत्तिविभागमेलिदंतीलीजेतीनभागवज्रीचौकरीजी
 ये ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ एओयधनौतनसकलकूटिछाणिअद्ववास ॥ यहचूरणारेचकउदरकरैरो
 गकानास ॥ ४८ ॥ पाचनस्नेहनआदियहस्निग्धकोष्टकोयोग ॥ कहंओरसवनामलेतवा
 जानैसवलोग ॥ ४९ ॥ कवित्त ३१ ॥ कासस्वासपांडुरोगज्वरकुष्ठगलग्रहधूमध्वजमंदहो
 तहदेरोगजाचिये ॥ जीरजीराणीगदगुदाकेनिकटव्रणअनूगानधेनुदूधइनाहीसों ।

सानिये ॥ गुल्मको वदर नारारसी कायवातरोग अरं सद्य डिमजल घृतविषयानिये ॥ धेनुत
क्रपेटरोगवणि दुगधजोग अजीराण कों को सजल अनूपान जानिये ॥ १०० ॥ दोहा ॥ पेटपीडसौ
वीरजल दहीमसु विडभंग ॥ लेहमद्य आध्यानगद अनूपान के संग ॥ १ ॥ वृद्धनारायण चूर्ण
यह वातरोग सब जाहि ॥ पेटित देह विचारिकै रोगी निह वै सोहि ॥ २ ॥ इति वृद्धनारायणी ।
चूर्ण ॥ अथ लघुनारायण चूर्ण दोहा ॥ इक पिचुली जै पीपली ति वी एक पलमान ॥ सेत खंड पल
मेलिकै की जै चूरन जान ॥ ३ ॥ जाहि उदर आध्यानगद विटको दरक फपित ॥ पिचुमात्रा चर
ण सहित मूलरोग को पित ॥ ४ ॥ इति लघुनारायण चूर्ण वात विकारे दोहा ॥ ली जै पल इक
शुंठी गुड गोली करिकै बाई ॥ उदररोग के नाश को क ह्यो वैद्यमन लाई ॥ ५ ॥ अथ वज्रचार
दोहा ॥ माणि मंथ सौ चरसमुद का चलूण से लेह ॥ यवाषार टेकण सजी तार तुल्य यह ले

वे
७२

देह ॥ ६ ॥ सवसमचूराकीजीयेआकदीरनुहीदीर ॥ तीनतीनकीभावनाआत्मपरबोधी
॥ ७ ॥ पत्रजुलीजेआककेतापरलेपलगाई ॥ धरीपिठरीमध्यदलऊपरिसुइसाई ॥ ले
पजुकीजेवसनमृतधरीयेधूपसुकाय ॥ हांडीकोंगजपुटकरहुगोमयअगनिपचूय
॥ जक्षीतलतवकाठिलेचूरासेलौएह ॥ अषात्रिफलाजीरनिशिनिचवर्कचि
त्रसमदेह ॥ १० ॥ अर्द्धचारचूराअर्द्धदोइटेककहिमान ॥ गुल्मशूलअरुउदरदुख
शोथअजीराहाने ॥ ११ ॥ जाकीभूषजुमेंदपुनिताकोवहतीभूष ॥ पेटअफारासीहलि
फजावहिएतेदुष ॥ १२ ॥ बायहोइजाकेअधिकतप्तदेहजलपान ॥ पित्तअधिकजोघ
तसहितकफगोमूत्रवृषान ॥ १३ ॥ काजीसेतीदोषत्रयअनूपानहेएह ॥ वंज्रचारस
वकोंकहेइमरोगानिकोदेह ॥ १४ ॥ इतिवज्रचारः ॥ अथविंदवृत्तरेचनकथनदेह

रामः
७२

है पलनी जै अर्क पय बट पल थो हरि दीर ॥ पल पल नी जै औषधी कहौ नाम अरु वधीर ॥ १५ ॥
हर दे हर मल नी लनी चित्र कंदर्प मे लि ॥ किरमाला शंख निति वीश्या मार्क पिल मे लि ॥ १६ ॥
यह औषध करी एक ठे प्रस्था क घृत पाई ॥ अगनियोग पचाई कै विंदु मात्र ले पाई ॥ १७ ॥
पावे जे ते विंदु न रंति रेचन जान ॥ अलभ गंदर गुल्म कुष्ठ उदावर्त गदहान ॥ १८ ॥ मलि
न कोष्ठ अरु उदर गदरेचन को यह भाष ॥ पाको विंदु घृत नाम है लिख्यो ग्रंथ की शाख ॥ १९ ॥
इति विंदु घृत ॥ इति उदर रोग चिकित्सा ॥ अथ शोथ चिकित्सा दोहा ॥ वात शोथ तन जा सकै
अर्द्ध मास ति वी पाई ॥ अथ वा एरंड ते लपय पेट वेध मिटि जाई ॥ २० ॥ कडू नी व पुनर्न वा
हर दे प्रुठी गिलोई ॥ देवदारु पटोल दल काथ करौ सब कोई ॥ २१ ॥ अलघंघ अरु पांडुग
दस्वस उदर दुख जाई ॥ सर्व शोथ तन की हरै कह्यो जु कवि समुजाई ॥ २२ ॥ इति शोथ को

वे०
७३

इति पुनर्नर्वादि कायः दोहा ॥ एरंडशुंठी पुनर्नर्वापे च मूल करिकायः ॥ वातशोथकोशस्तहैहंकर्तुं भैगायः ॥ २४ ॥
कायः दोहा ॥ देवदारु छिन्ना हरड संपुनर्नर्वाघालि ॥ कायमूत्रपुरसंगयत्वे चाशोथको
शालि ॥ २३ ॥ स्वेदपांडु जाडा उदर ऊर्ध्वश्लेष्मकोषाई ॥ कीनो है उपगार नर रहे पथ्यसवकोई ॥ २४ ॥
इति कायः दोहा ॥ धनीया जीर शुंठी वन्हिकाणा कडारी देह ॥ पाठ निशामगधाजटागजपीप
लिसमवेद ॥ २५ ॥ चूणापी जैडस्मजलतामहिमे लिय प्रातसमै जोयाइये शोथरोगको पैलि ॥ २६ ॥
इति कृष्णादि चूर्ण दोहा ॥ गुड अरु आद्रक शुंठी गुड गुड हर देय हमे लि ॥ अथवा गुडपीप
लिकर ह शोथ अस्मकोरे लि ॥ २७ ॥ अथ शोथको लेप दोहा ॥ इटस टनागर कल्क करि धे
नुमूत्रमहिपीसि ॥ तापरि लेपन की जीये शोथ अंग नहि दीस ॥ २८ ॥ दादु गिलोई पुनर्नर्वा
रस आद्रक दशमूल ॥ आद्रक नीजै प्रस्थर सगुडा तुलामहि पूर ॥ २९ ॥ एकै रस वमे लि
कै अंगनियो ग करिकाय ॥ तामहि मे जो चक्कल दित्वा को घुपत्र साय ॥ ३० ॥ कर्षप्रभा

रामः
७३

नाचूरनदीजैभेलि॥ तामहि कुडवप्रमनमधुशर्तिलैतवभेलि॥ ३२॥ मथौ चतुरदार्दीष
घनकहीपुननैवालेह॥ साध्यअसाध्यविचारिकैतवषानैकोदेह॥ ३३॥ जाहिअरुचिअरु
शोथतनस्यकाशहरशूल॥ लगेभूषअरुवाणकरइनसमनाहितल॥ ३४॥ इतिपुनन
वादिनेहदोहा॥ हरहकाथदशमूलजलपरमितनीजैकंस॥ तामहिडारहहरदशत
तुलादाषपुनिअश॥ ३५॥ अगनिमंदपरिपाककरिलेहसदशदैजाई॥ तामहित्रिकुटाचा
रचतुःपलैद्वेमाहिरलाई॥ ३६॥ कर्मकर्मत्रिसुगंधशुभप्रस्यआधमधुलेह॥ काथउसज
वशीतदैतवहिडारियेह॥ ३७॥ एदशमूलहरीतकीकहीचरकअषिआन॥ शोथसंक
नसर्वांगकीशिवाकंसअभिधान॥ ३८॥ हरेशूलदुर्जयमहागुल्मअर्शपोडुरोग॥ नाहि
अरोचकमेहज्वरउदररोगकोजोग॥ ३९॥ इतिदशमूलहरीतकी॥ अथकंसहरीतकी॥

दोहा॥ करहु काय दशमूलवरकंसवीचजनघालि॥ हरडैलीजैएकसौंशतपलदाय
 उबाल॥ ३९॥ सिद्धभईलेहीजवहितामैत्रिकुटादेह॥ तीनगंधहपुष्यास्थिरासवसम
 मेलोएह॥ ४०॥ अर्द्धप्रस्थमधुस्रद्धकरशीतलदैतवपाई॥ यवावारतामहिधरौक
 रौलेहमन्त्रभाई॥ ४१॥ हरडैएकभछनकरहुशुक्तिमानलेयाई॥ कासअरोचकगुन
 मज्वरुमीहमेहसवजाई॥ ४२॥ पांडुरोगअरुउदरगददोषतीनवैजास॥ आमवात
 वैवायिकृशअरुपित्तकानाश॥ ४३॥ शुक्रदोषअरुअसृगसववातदोषमूत्ररोग॥
 कंसहरडअभिधानहैप्रपथुरोगकोजोग॥ ४४॥ इतिकंसहरीतकी॥ अथशोधग
 णश्रीषधदोहा॥ देवदारुदंतीतिवीरुठपहकरजान॥ आसगंधअरणीहडुंठुंठीश
 तावरमान॥ ४५॥ हलदकनेरसुहांजानारवाटिरथेकविधार॥ इटसटमरुयारासनथो

हरित्प्रुनविचार॥४६॥गुम्मातोरीमैफलप्ररुमजीठारेंड॥एऔषधहैशोथकेकरैताहि
शतषंड॥४७॥अथशोथउपड्वदोह॥स्त्रासछर्दितस्त्रास्त्रसनअरुचित्तपुष्टितिसार॥कु
शतदिहीसुताउपड्ववाहविचार॥४८॥पादशोथनरऊर्द्धगतिनारीमुखगतिनीच
शोथगुह्यनारीपुष्टिकहौताहियमवीच॥४९॥इतिउपड्व॥इतिश्वपथुरोगचिकित्सा॥
अथअनुकृष्टाणिकादोह॥वाधियवनअर्दितकठिनवातरक्तकहीआन॥आमवात
ऊरुस्तंभपुनिशूलवीचपहिचान॥५०॥उदावर्तआनाहहियमूत्रकृच्छ्रपरमेह॥मेद
उदरअरुपत्यरीशोथखंडमैछेह॥५१॥सुमतिमेरुगुरुचरणयुगनमतिशीशामुनिमान॥कवि
प्रसन्नमुजऊपप्रगटकह्यौयहज्ञान॥५२॥इतिश्रीवाचनाचार्यश्रीसुमतिमेरुगणित
छिष्यमुनिमानजीकृतभाषानिदानचिकित्साकविविनोदनामभाषाखंडचतुर्थसमा

बै०
७५

प्रम० ४॥ अथ अंडवृद्ध चिकित्सा दोहा ॥ सेंधा जीरा हिंगु सम सरसों तेल पचाई ॥ लेप जु की
जे प्रात उठि अंडवृद्धि मिटि जाई ॥ १ ॥ इति तेल दोहा ॥ त्रिफला चूरन पीसिके धेनु मूत्र सहि
घालि ॥ प्रात समें जवपी जीये अंडशोथ को टालि ॥ २ ॥ एरंड तेल विहाल पुनि पय घृत सों संय
ग ॥ प्रात समें जोपी जीये नाश होई अंडरोग ॥ ३ ॥ गो घृत लौन पुन नैवा आत पमाहि पचाई ॥ ले
प पतालू प्रात उठि शोथ अंड की जाई ॥ ४ ॥ शरपें से की लेह जड टोंक एक घृत संग ॥ मास एक
सेवन करै अंड ॥ ५ ॥ अथ लेप दोहा ॥ एरंड जीरा कठ पुनि बचहौ वेर मिलाने ॥
कोजी सों जो लेपीये अथ शोथ मिटि जाई ॥ ६ ॥ पंचवृक्ष की छाल ले घृत सों लेप बनाई ॥
अथ बाकाठा की जीये तापरि सेकु कराई ॥ ७ ॥ अथ पंचवल्कल दोहा ॥ बडै पल गुह्य
पिलु मणार सपी पल जान ॥ एपौ चोख दौरे के चल कल पंचयह मान ॥ ८ ॥ वचा सवै प

रामे
७५

लीजीये जलसों की जैलेप ॥ अंडशोश काना शकहि वडी जानियहयेप ॥ यत्नचाशियुभ
रुसर्षपापी सहजलसंयोग ॥ फले आपवेन काशोय जौ करै नाशयह रोग ॥ १० ॥ कुठ अ
रुद्धि न्नपुनिलेह अगार देवदारु ॥ आरनालसंग मूत्रकेलेप शोथकों दार ॥ ११ ॥ रासना
रंड गोषरु सहज जो गुगिलोई ॥ वलाकाथरु वतेलसों अंडवृद्धि कों षोई ॥ १२ ॥ कुंदरु
गेहं चूर्ण सम भेड दूधसों पीसि ॥ सुखोष्ण की जैलेप यह ब्रध्म फूल कों षोस ॥ १३ ॥ गोक्षु
रसै धातु ध्रुंठी दृषद भेद देवदारु ॥ वायविडंग घृत चूर्णसंग ब्रध्म जुरोग विदार
॥ १४ ॥ इति अंडवृद्ध अत्रवृद्ध ब्रध्म चिकित्सा ॥ अथ गलगंड चिकित्सा दोहा ॥ सरसों
बीज सुहां जनाशान के बीजर लाई ॥ यवले मूली बीज सम आग्न तक मै पाई ॥ १५ ॥ पी
सिलेप गलगंड कों अथि गंडगल माल ॥ बहुत काल के रोग यह जाइ सवे पै माल ॥ १६ ॥

इति गल गंड दोहा ॥ त्रिफला पीपलिराजं वृक्षसमकरिणीसौ आन ॥ तस्योदकसौ पीजीयै गंडमा-
 लकी हान ॥ १७ ॥ श्लोकः ॥ आरग्वधशिफाक्षिप्रपिष्टाते दुलवारिणा ॥ सम्यक् नस्य प्रलेपाभ्यां गे-
 डमालो समुद्धरेत् ॥ १८ ॥ इति गंडमाल दोहा ॥ अंठभाडेगी समकरहु ते दुल जल मैमेलि ॥ के-
 ठलेपजे की जीये कठिन अजीरी रेलि ॥ १९ ॥ इति हंजीर दोहा ॥ दशपल लेहु कचनारत्वच-
 त्रिफला घटपल लेहु ॥ त्रिकटाली जैतीन पल बहणा पल इकलेहु ॥ २० ॥ कर्षक र्षा ली जी-
 तज इलाई चौपाल ॥ गुग्गुलु सवसमं आनि कै की जै गुटिका जान ॥ २१ ॥ टेका एक भक्षणा-
 करै रौ ॥ काय सौ देइ ॥ अथवा दी जै तप्त जल मुंडी काथ करै ॥ २२ ॥ गंडमाल त्राण कृष्ट ग्रंथिम-
 हा भगंड रजास ॥ गोली या वै प्रात उठि होई अर्बुद का नाश ॥ २३ ॥ नीव पत्र अरु लै र्षा भस्म भी-
 ला वे घालि ॥ छाग मूत्र सौ पी सि कै लेप न अपत्ती दाल ॥ २४ ॥ श्लोकः ॥ स्वर्जिका मूल कक्षार-

शरवचूर्णसमन्वितः प्रलेपो विहितः। श्लो हंति ग्रंथ्यर्वुर्दोदिकान्॥२५॥ इति गलगंडगंडस
नहंजीरग्रंथ्यर्वुर्दोपचीचिकित्सासमाप्ता दोहा॥ पीपलित्रिफलादारुशुंठिडारुटमेलोआ
न॥ सवश्लेष्मादोऽपलसमविधारले जान॥२६॥ भयोचूर्णकोजीसहितकर्षमानहैए
ह॥ श्लीपदजाकेरहेताकोतुरतहरेह॥२७॥ हरडधत्तरसुहोजनानिरगुंडीदललेई
सरसोपीतपननेवाजलसोलेपकरेई॥२८॥ चरनठरनश्लीपदहरनवहुतदिनाकाजा
हि॥ सिद्धयोगमैएकह्योरक्तकठावोताहि॥२९॥ इति श्लीपदलेपदोहा॥ हरडैसैधवधा
तकीताकोकरियेचूर्ण॥ घृतमधुसेतीचाटियेहरैविद्रधिर्कोत्तर्ण॥३०॥ इति विद्रधिचिकि
त्सा॥ अथ व्रणशोथचिकित्सा दोहा॥ इटसटदारुसुहोजनादशजडशाथरनाईशोथ
होईकफवातकीलेपकीयेसोजाई॥३१॥ पांचपईसामोमलेघृतसिरसाहीआठ॥ एकक

सीरातुत्यभनिऔरकह्योसुनिपाठ॥३२॥घृतपवारिमधिमोमदेतामेंसंगफयोसि॥करिइक
 ठसवमेतिकैवस्राणिडविमीस॥३३॥लाईवस्रब्रणऊपरिदिनअंतरकेदोई॥ब्रणचोदी
 दास्रणमहाताकोनाशकरेई॥३४॥पुनःचौपाई॥नीलाथोथालेहजलाई॥खैरकपीरारालामि
 लाई॥मुरदासिंगपीसिकैलेह॥जोघृतसवतेंचौगुनदेह॥३५॥मलमजुकीजैविधिसोंआन
 वहतवेरजलेमथोसुजान॥ब्रणकीजातिरहेनहीकोई॥मांसवठैमुरदारनहोई॥३६॥
 इतिब्रणमलमजुहा॥भस्मजुकीजैआनियवतिलकातेलमिलाई॥अगनिदगधको
 लेपहैछिनमेंताहिमिलाई॥३७॥इतिब्रणचिकित्सादोहा॥ईटपुरातनअंठीलेवटप
 त्रअंठीगिलोई॥ईटसटचूरनसूक्ष्मकरिलेपभगंदरहोई॥३८॥धत्रीदेखोहलदपु
 निपीसहुनीरमिलाई॥प्रातसमेंलेपकरैरोगभगंदरजाई॥३९॥अस्थिलेहमेंजो

रकौरसत्रिफलासौपीसि॥ लाबोधसिकै॥ परिहोई भगदरबीस॥ ४०॥ श्रुंठी हलद वट पत्र लेसे भा
सम जुगिलोई॥ जाइ पत्र घसिलाइ येनाश भगदर होई॥ ४१॥ इति भगदर चिकित्सा॥ अथ उप
देश हेतु कथन दोहा॥ अति प्रसंगति यसों करै योनि दोष सै गन॥ हस्त दंत नख घात ते चो
ट अधावन जा॥ ४२॥ याते उपजै मेरु गदक है ताहि उपदेश॥ करै समजिता कि किया ह
रै रोग का अंश॥ ४३॥ अथ चिकित्सा दोहा॥ त्रिफला की जै काय पुनि सेवन की जै सार॥ रस भ
गरा प्रक्षाल ब्रण उपदेश हो है नाश॥ ४४॥ त्रिफला करिये दग्ध पुनि लोह पात्र में लेई॥ मधु
सौं लेपन की जीये ब्रण उपदेश हरेई॥ ४५॥ इति उपदेश चिकित्सा॥ अथ कथं चिकित्सा दो
हा॥ चित्रा कुठइ लाई चीर सवति देती आन॥ शौंफ विडंग अरु खरटी कुंठ लेप करिहान॥
४६॥ राजवृक्ष के पत्र लेपी सह को जी साय॥ दद्रु सिध्मा कुंठ किटि भरै निकट जगनाय॥

४७॥ पवाडवीज अरुवाकुची सर्यपतिलमहिमेनि॥ निशादोडकुठमोयसमतक्रयोसिकेमेनि ४८॥
 निपनकीजेदद्रुसवअरुविचर्चिकाजोई॥ दासणकंडूकुष्टसवनशकरणकोंहोई॥ ४९॥ इति
 लेपदोहा॥ खेरनिववासात्रिफलपटोलपत्रगिलोई॥ समचूराणजलपीजीयेनाशकुष्टको
 होई॥ ५०॥ चौपाई॥ नीवगिलोईनिशावचदास॥ कडुकीत्रिफलाविचलेडास॥ दासहलदवा
 साजुविडंग॥ चूरनपीसिपीवोजलसंग॥ ५१॥ कुष्टरोगकोकहोवनाई॥ कंडूदद्रुछिनमहि
 जाई॥ एओषधुअनुभौकरिलीना॥ सिद्धयोगाजानिप्रवीना॥ ५२॥ इतिकुष्टचूराणदोहा
 चित्रजीवअरुकुठवचगुंजापीसहआनि॥ कोजीसोंजोलेपीयेस्वेतकुष्टकीहानि॥ ५३॥
 ऊगाभसमअरुवावचीचित्रामनशिनपाई॥ कोजीसोंजोलेपीयेस्वेतकुष्टमिदिजाई॥ ५४॥
 समसिंदूरअरुमरिचसममहिषीधूतसंयोग॥ मूथिकेलेपजुकीजीयेनाशयामकारेग॥ ५५॥

नीलाश्यावावची गंधकहरदमिलाई संवतें दुगुं न पवाड धरिसाजी चीकरलाई ॥ ५६ ॥ स
र्दनकी जैती न दिन कटुक ते लमहि पाई ॥ नाशे पाम अनेक विधि महिषी गोवरुं हाई ॥ ५७ ॥
अथ मरिचादि तैले कवित्त ३१ ॥ चंदन रक्त कुठपी पलि मरिच छड करवीर हरताल दे
वदार मेलिये ॥ मज शिल आकटू धगोवर कोर सविष डारियै रजनी दोनु आध पल भेलि
ये ॥ सवमि लिंग ककरि चूरन सपिष्ट की जै कटुक ते लप्रस्थली जै धेनु मूत्र ठेलिये ॥ मंद मं
द अगनि पचाईली जै एठौर वासन कडाही मत्तता महि करेलिये ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ केंडू पाम विच
र्विका अरु विस्फोट वषान ॥ मलनें हुंते शोत होई त्वचा जु कनक समान ॥ ५९ ॥ खेत कुष्ठ
प्रवर सभनिकुष्ठ अठारह देह ॥ जराहरण नखल करण मरिच ते लकही एह ॥ ६० ॥ इति
मरिचादि तैले दोहा ॥ निगंध वावची दूव पुनि संधा शिवा पवार ॥ काजी सेती ले पीये सह

वै०
७८

रदादगवाइ॥**६१**॥**चौपाई**॥ सिंदूरगुगुनुरं सवति आनि॥ नीलायोयामेलिसमानी॥ कडुकातेल
चौगुनजुपचाई॥ कंडूपाससर्वदुखजाई॥**६२**॥ इति सिंदूरादितैले दोहा॥ हलददूवसवपी
सिकैलेपहुजलसोमेलि॥ सहरपामदडुकठिनइनहिंरोगकोपेलि॥**६३**॥ अथ विसर्पक
सूचिकित्सा दोहा॥ चेदनमोयईलाईचीतगरहरिद्रादोई॥ छडमहलठीकुठसमखील
शिराहकीहोई॥**६४**॥ चूर्णपीसिघृतसाथमथिलेपहुकुसुकोदोई॥ ज्वरविसर्पव्रणशोथ
गदहरैदशोगयहलेई॥**६५**॥ **श्लोक**सारंधरात्॥ एलामोशीनिशायुगं कुंठेवालकमेवच
इति॥ चूर्णलेपोयेदशमोशघृतसुतः॥**६६**॥ जलेनक्रियतेसुत्रैः दशोगइतिसिञ्जितः॥ वि
सर्पाम्रविषस्फोटानशोषान्दुष्टव्रणान्जयेत्॥**६७**॥ इति दशोगलेपदोहा॥ उत्पलचेद
नरासनाअरुमहलठीदार॥ पूर्णपीसिघृतहीरयुतलेपविसर्पकोदार॥**६८**॥ इति विसर्प

रामः
७८

लेपः॥ दोहा॥ रामसे नभाया कडू पत्र मसी वप देलं॥ विफला वासा यष्टिका अरु मस पर्यट को
ल॥ ७०॥ द्वादशांगयह जोग है घृत सौ लेप वनाई॥ कद्यौ एह विस्फोट को लेप कीये सै जाई॥ ७१॥
इति विस्फोट चिकित्सा दोहा॥ द्वे चंदन कदुरो हिणी पर्यट नी वडुशीर॥ वासा धात्रि देरालभा
पटोपाठ भनिधीर॥ ७२॥ निंबादि कयह चूर्ण समतामहि मिश्री मेलि॥ बाहि चूर्ण जल पान सौ
शीघ्र मसूरी रेलि॥ ७३॥ इति निंबादि चूर्ण दोहा॥ हरै रक्त मोक्षण किये विना औषधी जाई॥
कहै असाध्य मसूरिका दैव योग शुभयाई॥ ७४॥ इति मसूरिका चिकित्सा दोहा॥ कुठ सिंभा
लु सारि वाचं दन डोडे पाई॥ सम करि पीसिहु लेप जल नूत वृषा न रहई॥ ७५॥ इति लूप ले
प दोहा॥ रंभा पत्र जु भस्म करितामहि हलद प्रसेग॥ जल सों कीजे लेप तन थंभ रोग को भं
ग॥ ७६॥ चंदन मूली बीज पुनि टेका ताल कपूर॥ रस जंभीरी लेप तन थिंभ रोग को चूर॥ ७७॥

वै०
८०

गेधकचंदनमेलिसमं नीवूरससं लेप॥ सातदिवसमहिदेखियेयिं भरोगसंघेपं॥ ७८॥ इतिधि
भचिकित्सा दोहा॥ अर्द्धदग्धकरि सीपिका दधिसोपीवैकोई॥ ए औषधपेडितकं ह्यौ नाशना
रूवा होई॥ ७९॥ इति नारूवा दोहा॥ काकजं घाजडभस्म करि शस्त्रघावमहि घालि॥ पीडा रक्तं
प्रवाह बहनाश होई ततकाल॥ ८०॥ इति शस्त्रघाव औषध दोहा॥ विजै सारका सीसनिशि
मरिच दुगुन गुड लेई॥ गोली कीजै पीसि करि चोट पीडन रहेई॥ ८१॥ मैदा हलद मिली स
मजल सों लेपौ अंग॥ टोंक एक भक्षन करौ हरै जाहि अभियोग॥ ८२॥ चोपाई॥ दधिसों काही
पीड मिली॥ चोट व्यधा बहु दिन कीजाई॥ हा ल्यो पाई लेप पुनि करै चोट पीर तन निहचै ह
रे॥ ८३॥ इति चोट चिकित्सा॥ अथ मुख रोग चिकित्सा दोहा॥ एलाक पुतना बीस्सम मुख में
मेलौ जास॥ पाक वदन अरु रक्त मुख इन तें होवै नाश॥ ८४॥ वासारस अरु हित निजि दो

रामः
८०

नुमथि कै देई सात दिवस च वी सुवह संतर कत ना सेई ॥ ८५ ॥ नीला योथा फिटकड़ी रत्ना क
त्यु समान ॥ पीसि चूर्ण दोत्तै मत्तै ॥ दृढ पीडा की हान ॥ ८६ ॥ निशायुग्म पाठा कड़ु कुठ के पीला लो
द ॥ काल मेथिका तेज वल चूरन परम प्रमोद ॥ ८७ ॥ सूक्ष्म जु छाण हवस्त्र म हिमलेह दंत
सौ लाई ॥ रक्त श्राव अरु दंत रुक् वज्र दंत कै जाई ॥ ८८ ॥ स्वेत कत्य वासा कड़ु कुठ लोद सम आ
न ॥ मोथ मजीठ मिलाई कै सम करि पीसहु जान ॥ ८९ ॥ दोत्त समन जो रक्त है औषध मल नै दे
ई ॥ पीड प्रवल अरु कीट दुरवता हिशी घहरिलेई ॥ ९० ॥ दाव गिलोई फल तीन ले दल चंवेली
पाई ॥ दाल हलद पाठा सुनहाली जै सम भाई ॥ ९१ ॥ करहु काय चातुर पुरुष कुरुली मधु सौ ले
ई ॥ वदन पाक अरु रक्त स्रव इनका नाश करेई ॥ ९२ ॥ इति काय दोहा ॥ सूर्य पसे धालोद वच
॥ औषध सम आन ॥ जल सौ वदन जु लेप करि नाश काल की जान ॥ ९३ ॥ जीरा सरसौ पीत ले अ

रुद्धलीरतिलस्याम॥ पयसो लेपनकी जीये रहै न छाड्की माम॥ ८४॥ कुठहलद अरु लोद पदु॥
 औषधसम करिलेई॥ नीबुरससो लेप करि छाया नाश करेई॥ ८५॥ त्रिफलाकी जै कायसम करि
 करली मुखमोहि॥ वदनपाक अरु देत दुखरोग दुहेके जोहि॥ ८६॥ लोद अरु पाठा कडू अरु
 मजीठ कुठलेई॥ निशाते जवलमे लि कै सूक्ष्म चूरन करि देई॥ ८७॥ यह चूरन सब ग्रंथमें
 घसो दंत के मूल॥ हरै रक्त द्विज के सकल के डूपी डा चूर॥ ८८॥ हींग दंतम हिरा धिये दंत पीडे
 मिट जाई॥ जाई पात चवर्ण करहु चल दंत जा सुमिटाई॥ ८९॥ अथ गलरो मप्रतीकार दोहा
 त्रिफला दार्वी मोयत्व कविडु दा कटु की दास॥ दौद्रसहित गोली करहु रोग लैं कानां ब॥ ९०॥
 वचामरि चपाठा कण सिंधु कुट्ट पलमान॥ सबसम औषध मधु सहित गल ग्रंथी कर्षीन॥ ९१॥
 कटु की पाठा डेंडू यव मोया नारियली॥ काठा करि कै धेनु जल पीये होई के रसीय॥ ९२॥ कुट्ट

व्योषदावीचचात्रिफलाशयः॥३॥ मोधासमचूरनकरहुगलपुदमधुसैबाई॥४॥ इति चूर्जदो
हा॥ पंचकोलतालीसदमिरीत्वभात्रुटिआन॥ मुष्ककयवशुकक्षारत्रयलेहुसवेसममान॥४॥
लेहुपुरातनद्विगुणगुडगुटिकाअगनिसंयोग॥ गोलीवदरप्रमानधरिगुस्तयहेकंठ
रोग॥५॥ पुष्ककलीजेभस्मकरिजलसंयोगलेद्वार॥ गुडसोगोलीवदरसमकंठरोगनिर
वार॥६॥ इतिकंठरोगचिकित्सादोहा॥ पंचवल्कलककाप्यअरुत्रिफलाकैजोग॥ वदन
पाककोश्रुहेदोइसायमुखरोग॥७॥ इतिमुखदंतगलरोगचिकित्सादोहा॥ शृंगवेरसै
धवमधुकतेलपक्करिलेई॥ ईषदुस्मधरिकानमैताकीपीडहरेई॥९॥ आद्रकमूर्वाशि
गुरसअरुवैगणरसमूल॥ सैधवमधुसंयुक्तकरिपृथक्कर्णहरशूल॥८॥ इतिकर्णपीडा
पांचयोगएकैकऔषधदोहरैवीचकहेदोहा॥ पीतहोईजोआकपत्रकरोलेपघीसाय

ताकोतप्रसकाठिलेपाईकानलेहाथ॥**१०**॥कानपीडअरुअलबहुकानजुशब्दकरेई॥जा
हिकीटअरुक्लेंदपुनिताकोतुरतगमेई॥**११**॥टंकदोईकिराईतापांचदोंकलेतेल॥अगनि
जोगपचाईकैधरौकानकीगेल॥**१२**॥कह्योएहअनुभूतहैकीपौवेरदुइचार॥गुरुमुखसुवी
करतव्यताकाणवेदनाहार॥**१३**॥होगतुंवरुअंठीसमसर्वपतेलपचाई॥काणअलपरा
करहुरोगतुरतमेंजाई॥**१४**॥इतिहिंसादितैले॥लअनुअर्कतिलपत्ररसकानबीचमें
पाई॥वहराफोडीपूतिमुखएतेरोगनसाई॥**१५**॥वचाअंठीदेवदारुअनुनिसेंधासोचरपाई
अजामूत्रसोतप्रकरिकह्योधिमिटिजाई॥**१६**॥लअनुकूटिरसकाठिरेईसदुष्मकरि
पूर॥काणनादजोप्रवलकैकरोजाहिचकचूर॥**१७**॥चौलाईदलपाईकैरसकाठोषटसे
ग॥पूतिजाहिकानेस्रवैकरैदरिनिसेक॥**१८**॥स्वादमूत्रलोआनिक्कैताहिद्विपुत्रचीमे

लि॥ चूरनयावेटेकदुइवाधिरकाकेंकोपेलि॥१८॥ इति कार्पण्यरोगचिकित्सा दोहा॥ हरडेद
डिमफलसमदूवकसुंभरनाई॥ शीतवारिसोनासदेरत्तनासिकाजाई॥१९॥ गुडशों।
त्रिकुटामेलिकै नितउठगालीषाई॥ शीशपीडपीनसप्रवत्ततुरत्तरोगादि॥ टिजाई॥२०॥
फलविंदालतिलदुइप्रमितमरिचताहिसममेलि॥ नासदेहुजलसाथसोपीडापीन।
सरेलि॥२१॥ इति नासारोगचिकित्सा॥ अथ अनुक्रमणिका दोहा॥ अंडवृद्धिगलगंड।
पुनिगंडमालअंजीर॥ अपचीअर्वुदग्रंथिपुनिविद्धिजानिवरवीर॥२२॥ ब्रणभण
दजूपदेशकहेवीचइनमोहि॥ दुइमसूरसेक्षेपकरिविस्तरकहेनजाहि॥२३॥ अवण
दंतमुखनासिकापंचमखंडमजार॥ रचीसुविधिमुनिमानजीसवजनकोसुखकार
२४॥ इति श्रीरत्नरगछोयश्रीवाचनाचार्यश्रीसुमतिमेरुगणितछिष्यमुनिमानजीकृ

तभाषावैद्यविनोदनामनिदानचिकित्सासंक्षेपपंचमखंडसमाप्तः॥५॥ अथरोगनित्रचि-
 कित्साप्रारम्भते दोहा॥ दालहलदसैंधवहरडरसवतिगेरुपिष्ट॥ बाहिरकीजेलेपअक्षि॥
 रोगहोईनिकष्ट॥१॥ दारुहलदरसदोईसमचूरणसूक्ष्मपीसि॥ सन्ययुक्तअजनकर-
 हुदाहपीडशीघ्रसीस॥२॥ चंदनगैरिकलोदसमजातीकुसुमरत्नाई॥ तामेंमेलोमुहलठी
 लेपकरौमनभाई॥३॥ पित्तदाहकोलेपयहअरुणअक्षिहोईजाई॥ पीडाअधिकीहो-
 ईजोकरैदूरियहलाई॥४॥ त्रिफलामिश्रीचूर्णकरिजलसंयोगसोसीच॥ आश्रोतन-
 नेत्रकोरहैनरोगअक्षिवीच॥५॥ सैंधागेरुदारुनिशिमुहलठीरसआन॥ मकरियोसहु-
 वारिसोलेपनेत्ररुजहान॥६॥ अथषडंगसौलुदोहा॥ वासानोवपटोलसमक्षित्तजुधात्री॥
 विभीत॥ गुग्गुलुडारुकाशरीअक्षीरोगकोजीत॥७॥ फोलअरुत्रणचीपडीअक्षिअरुण

कैजाई पीयो काय परात्ता पवै रोग न रहै ॥ ८ ॥ भीमसेन वरसुधपी सहवडकें दूध ॥
अंजन की जै शुक कौ मिटै अक्षिका वृद्ध ॥ ९ ॥ पल इक ली जै पी पनी ता सम फिटक डिंदेह
दशमा साधो धरहु पल इक मिसरी लेहु ॥ १० ॥ तामहि पल इक स्यामका च चरा सदा मं ग्री स नी
वूरस गोली करहु अंजन फोला पीस ॥ ११ ॥ इति अंजन फोला ति मिर कों गोली श्लोकः ॥ घृतेन पुष्प
मधुना श्रुपातं भंजेन केंद्रुति मिरंज लेन ॥ नक्तं ध्यत्तां को जी कत कपिष्ठा पुनर्नवानेत्र पुनर्नवा
करा ॥ १२ ॥ श्वेतं पुनर्नवामूलं घृतं भृष्टं सदा जयेत् ॥ इति ग्रंथ कारेणोक्तं दोहा ॥ फलकाति क
अरुज सदभ निरस महिदी महिमे लि ॥ नयनहु अंजन की जीये सव रोग नि कों पे लि ॥ १३ ॥ दो
ईह लट सुरमा चिल कजाती रस सों मे लि ॥ अंजन की जे नेत्र कों अधरा त्रि कों रे लि ॥ १४ ॥ अथ
पडवाल दोहा ॥ संधा कौ डेते नमहि घसौ जु कों शीया ल ॥ अंजन रगडा की करहु नेत्र पी ड प

डवाल ॥ १५ ॥ रसवति फिटडी शुद्ध लेतीय का दूध रत्नाई ॥ रग डह को शीया लभै नें त्रवाल मि
टि जाई ॥ १६ ॥ चोषागे रुल वन गडम रिचती न सम जान ॥ लेपन जल सों की जीये होई बाल
की हान ॥ १७ ॥ अथ सेवल वाय कौ अंजन दोहा ॥ परवाली मोती जस दसंग श्री रस मे लि ॥
षट षट टेक जुनी जीये चूरन इक ठा भेलि ॥ १८ ॥ काही चाक सू दंत उष्ट्र ती न ती न टंक
लेई ॥ अजा दूध को पपात्र में रग डा करि कै देई ॥ १९ ॥ अंजन की जेने त्रय दसवल वाई
कानाश ॥ दूध भात पथ्य ली जीये ॥ औषध है वास ॥ २० ॥ अथ नेत्र पोदली दोहा ॥ त्रिफला
सोण फिटकडी काही जीरा देई ॥ निशालो दहा ल्यो ॥ अफीम रसवति आनि मलिई ॥ २१ ॥
औषध सम पोदली करौ नेत्र के हेत ॥ नाश करै सव रोग कौ ॥ नैन नैनिको सुख देत ॥ २२ ॥ अ
थ अंजन तिमिर फेने कौ दोहा ॥ मन शिल निक्कु दाशे खस म संधा सुरमा भेलि ॥ समुद्र

फेनअरुनिरमलीमिश्रीतामहिभेलि॥२३॥ अंजनछेलीदूधसेतिमिररोगसबजाहि॥ फोला।
बोरावायसवनेत्रपीडनरहाइ॥२४॥ अथयेणवातातगाथा॥ अभ्यावरहवीयामिरियापंचेव
वकाणमहाणा॥ अंजेतहजयनयुगंकरेइअइनिम्मलादिठी॥२५॥ कुंकुमअगरकंपूरकुठ
गजकेसरित्रुटिमेलि॥ चेदनरकततमालपत्रासमलीजैभेलि॥२६॥ सवसमसुरमाच
णकरिसूक्ष्मपीसिनयनेज॥ नरनंपअंजनअष्टहैतिमिररोगकोभंज॥२७॥ प्रलोकः॥ अं
वृकंवावराटेवाद्यधेसूक्ष्मेविचूर्णयेत्॥ अंजयेन्नवनीतेनहेतिपुष्पेचिरंतने॥२८॥ अथ
अंजननिषिद्धदोहा॥ मद्यपानअरुआतडरनवज्वररोदनजास॥ उस्मेवेगविघातसव
अंजननेत्रविनाश॥२९॥ अथनेत्रअपप्यकथनदोहा॥ अशुचिकोधमैथुनपवनवेगरोध
वमिखाय॥ अशुनीदविटमूत्रनिशिभोजनअतिआलाप॥३०॥ देतविघर्षणछर्दिजलस

क्षम अछर देषि॥ कटु तीक्ष्ण तो वृत्त पदु अम्ल उष्ण पुनिलेषि॥ ३१॥ मत्स्य मोस जंगल सुराधर
 स्नान कहि मान॥ और विदाही वरजिये कहै अपय्य ए जान॥ ३२॥ इति पथ्य॥ इति नेत्र रोग चि
 कित्सा॥ अथ निघे टक यन॥ गोधूम गुणः दोहा॥ वल कर शीतल मधुगुरु स्निग्ध रसायन ज्वर
 तिय अशक्त जो होई को धेनु दुग्ध परवान॥ १॥ उत्तम कृष्ण धेनु कहि श्वेत श्लेष्म गुरु होई ता
 को घृत दीपन कृशन लघु याही है सोई॥ २॥ इति सामान्य गुणः॥ अथ विशेष गुण दोहा॥ अर्श
 प्रद रभ्रम जीर्ण ज्वर यक्ष्मा अरु अतिसार॥ इन को घृत अरु दुग्ध है कहै वैद्य निरधार॥ ३॥ दो
 ण देह अरु जीर्ण ज्वर क्षत क्षय को यह जान॥ सम पय जल काठा करौ सो अमृत पय पान॥ ४॥
 अथ पात्र गुण कथन दोहा॥ ताम्र पात्र महि हीर धर हरे पवन को एतु॥ केन कपात्र कहि पित्त
 को रजत श्लेष्म हरने ई॥ ५॥ कोष्ण पात्र के पान से रक्त पित्त का नश॥ माटी सब ते अधिक गुण॥

हरै दोष त्रय जास ॥ ८ ॥ इति पात्रं गुण दोहा ॥ उष्णधार हेशीतलं धुवन कर दोष न सो ॥ इति न दो
षनुत्त जानियै कहै वैद्य सब को ॥ ९ ॥ करै पान धारा शिशिर हेत दोष न नाश ॥ सुधा समान पे
डित कह्यो वल कर कहियै जास ॥ १० ॥ धेनु दुग्ध धारा उसन माहिष धारा शीत ॥ आ विषय्य
शृत उष्ण भनि अजा शीत शृत मीत ॥ ११ ॥ वात पित्त हर दुग्ध गो सब ग्रंथ निमत्त एह ॥ मन प्रस
न्न अरु वहत वल कथित होई त वलै ॥ १२ ॥ इति गो दुग्ध गुणः दोहा ॥ मधुर भैसगु रस्निग्ध
वल निद्रा प्रुक् करे ॥ कफ कर शीतल जानियो ताहि दुधा हर ले ॥ १३ ॥ इति महिषी गुणः
दोहा ॥ हरै त्रि दोष छाली दुग्ध को डी तीषी सा ॥ अल्प काय जल पान तु छता तै रोग मिट जा
ई ॥ १४ ॥ इति वकरी दुग्ध गुणः दोहा ॥ दुग्ध ऊंटणी उष्ण लघु कछुकल वका भेद ॥ अर्श उदर
कृमि शोथ कफ वातानाह को वेद ॥ १५ ॥ इति ऊंटणी दुग्ध गुणः दोहा ॥ हरै पित्त शृत शीत पय

मारुतश्रुतकफउष्म॥ अतिपक्ववलवर्द्धनकरैस्त्रिगुधकोतिगुरुपुष्म॥ १४॥ आमदुग्धकहिवा
तप्रदकफगुरुअधिकवषान॥ युवतिदूधपय्य आमवरपक्वविदोषीजान॥ १५॥ पियैप्रातः
भिष्टंभपयगुरुअरुवंहणजास॥ रजनीमुखवलनयनवरवातपित्तप्रमनाश॥ १६॥ कह्यो
नजाईइन्गेषमैंवठैअधिकविस्तार॥ औरग्रंथतेंदेखिलेसवपयलेहुविचार॥ १७॥ यहरु
गमेंपरवर्तैहैततेंइनकोंलेई॥ इनविनकामचलैनहींसवकोंएहीदेई॥ १८॥ इतिगाइमैं
सछेलीभेडऊंटणीअरुस्त्रीतिसकेदूधकेगुणकहे॥ अथदधिगुणकथनहोहा॥ इवत्तपा
नीडारिकैपरिपक्वकरियैदूध॥ जामणादीजैरात्रिकोंथानगरममुखरंध॥ १९॥ प्रातकांतद
धिसघनवरमिष्टहोईतवषाई॥ इनहिरोगकोंशस्तहैकहोंनरागुणजाई॥ २०॥ मूत्रकृच्छ्रशीतो
गपुनिविषमज्वरप्रतिश्याय॥ वलवर्द्धनअरुअरुचिकोंअतीसारकुमिजाई॥ २१॥ कहेरो

गाणसर्वनिकेदेषिग्रंथमुनिमंन॥ मूरखडरैअपेकादसोंद्येतौहोईहैरान॥ २२॥ तातोंपहिलैदो
षकोंसमजैपीछेरोग॥ देशकालवयदोषचलकरहुचिकित्साजोस॥ २३॥ इतिदहीमिश्र
गुणदोहा॥ दहीअमलगुहूसरउसनपाकअमलहुईजाई॥ यातेग्राहीरक्तपित्तशोथमेदकफ
दाई॥ २४॥ दधिउत्तमगोवलकरनरूचिप्रदाहीहोई॥ दोपनपाचनस्निग्धभनिहरैपवनकों
सोई॥ २५॥ दहीअजाउत्तमकहतलघुग्राहीहैजान॥ कासस्वासअरुअर्शक्षयकार्षेदोषत्र
यहान॥ २६॥ इतिवकरीदहीगुणःदोहा॥ दहीआविदुर्नामकफवातकोपवैजास॥ रसपाके
अभियेदवैदोषउपावनतास॥ २७॥ इतिभेडदहीगुणःदोहा॥ माहिषदधिसुस्निग्धहैश्ले
ष्मलगुरुहैएह॥ रक्तप्रदूषनवलकरनवातपित्तहरलेह॥ २८॥ इतिमहिषीदहीगुणःदो
हा॥ नार्यीदधितर्पणनयनतीनदोषकोंदेई॥ कहैजुमीठावालपुनिपुष्टिकरनयहसेई॥

इति स्त्री दधिगुणः दोहा ॥ दही ऊटनी भेद कर अस विपाक क दुहोई ॥ हरे उदर अस मूल कमिकु
 ह अर्श कोषोई ॥ ३० ॥ पेट वेध अस अनिल दुष वल वर्द्धन वै जास ॥ क ह्यो प्रशस्त सव ग्रंथ में
 करे दोष कानाश ॥ ३१ ॥ इति ऊटणी दधिगुणः ॥ दधि निषिद्ध दोहा ॥ ग्रीष्म मशर दिव संत दधि
 प्राये न दित योग ॥ हेमंत वर्षा शिशिर रूति कहै गुण वह लोग ॥ ३२ ॥ मूत्र कृच्छ्र अस काश प
 नि अस चिहोई प्रतिशपाय ॥ अतिसार अस विषम ज्वर देह शीत मिटि जाई ॥ ३३ ॥ दही रात्रि
 को पान नहि करै पान जो कोई ॥ भूषमंद अस कफ वठन सुख करना ही सोई ॥ ३४ ॥ इति द
 धिगुणः ॥ अथ तक्रगुणः दोहा ॥ दीपन या ही लघु वल दुरुक्षम धुर कायाय ॥ वीर्य उष्ण अस
 पुष्टि करवात नाश तक्र पाय ॥ ३५ ॥ शोथ छर्दि अस विषम ज्वर पांडुति दे अतिसार ॥ ग्रहण भग
 र मूत्र ग्रह अर्श पीड क मिहा ॥ ३६ ॥ मूल पीड क कृच्छ्र उदर अस चिह्न जास ॥ वा

पतघृतमुखलालवहृतक्रयानंतेनाश॥३७॥ इति तेजकगुणः॥ अथ नवनीतगुणदोहा॥ गुरुया
हीनवनीतभनिमथ्योत्तरतकोहोई॥ मीठाशीतलमेध्यलघुपित्त॥ बिलहरजोई॥ ३८॥ भूष
करनअरुक्षयहरननेत्ररोगकोएह॥ अर्शयोगव्रणकासकोनाशकरनकोदेह॥ इष्ट॥ चि
रोदूतमंथजुकहतकफभेदीगुरुहोई॥ वलकृतशिष्णुकोउचितहैहरेशोधकोजोई॥ ४०॥
माषनक्षीरविलोइकरिकाठिसचिकनफेन॥ ग्राहीशीतलवलधरननेत्ररोगमुख
देन॥ ४१॥ रक्तपित्तप्रशस्तभनिस्थूलकरनहैदेह॥ रसजाकोअतिमधुरहैकहैवैद्यगुन
गेह॥ ४२॥ इति नवनीतगुणः दोहा॥ गुरुदीपनचक्षुष्यघृतखादुरसायनजान॥ शीतवी
र्यज्वरदोषविषवातपित्तपवमान॥ ४३॥ तेजकोतिलावाण्यबुद्धिदृढकरिदेहीहोई॥ उ
दावर्तउन्मादव्रणशोधनरोपणहोई॥ ४४॥ नर्षएकपर्यंतहविउपरिपरातनजान॥ ४५॥

वै०
४४

मूर्छा विष अरुति मिरमद कुष्ठ मृगी काहान ॥ ४५ ॥ अधिक वर्ष जो होई घृत कहिन सके गुण के
ई ॥ क ह्यो जु वैद्य विचारि कै स र्पि दी रस म होई ॥ ४६ ॥ इति घृत गुणः दोहा ॥ तेल उष्ण वल वरा
कर देह स्थैर्य गुण गेह ॥ करै स्थूल अरु कृश हरन स्थूल नेत्र शिर मेह ॥ ४७ ॥ इति तैल गुणः
मधुर उष्ण एरंड वर शोधन दीपन जान ॥ कटग्रह उदर अनाद ह ए वातरक्त कोषान ॥ ४८ ॥
कांति बुद्धि वयस्यापि कर शोथ स्थूल हर गुल्म ॥ पुत्र विशोधन योनि दुख वातोदर को गु
ल्म ॥ ४९ ॥ इति एरंड तैल गुणः ॥ नीव तैल ब्रण प्रलेप ज्वर कुष्ठ रोग कृमि ज्ञास ॥ कटु विपाक
तीक्ष्ण उष्ण शोधन रोपण तास ॥ ५० ॥ इति नीव तैल गुणः दोहा ॥ सार्षप कंदू कुष्ठ हर कृमि
उत्त उष्ण वसान ॥ शीस कर्ण विष दोष लघु रक्त पित्त की हान ॥ ५१ ॥ इति सार्षप तैल गुण दो
हा ॥ माल के गुनी तैल सुभ प्रकृति पित्त की ला ॥ स्मृति बुद्धि गदगद वचन शीत हारिष

रामः
४४

फहास॥ ८२॥ इति हिंशुलगुणः दोहा॥ रक्तेणुकेडुडस्मज्जणशोधनरोपणजान॥ विषकेडुविस
८३॥ सुहरकरभग्नसंधान॥ ८३॥ इति सिंदूरगुणः दोहा॥ नीलापोषणलारकदुतुवंरविसदं
लघुगह॥ लेखनभेदनशीतचक्षुकफजित्तकहियेगेह॥ ८४॥ जणकेडुविषकं सुहरशोधन
रोपणजान॥ हरैजुकमिअरूपत्परीकेवदेवकहिमान॥ ८५॥ इति तुत्यकगुणः दोहा॥ मधुर
स्निग्धसौवीरहिमवमिविषहिकास्वास॥ कफपित्तदायअरुअस्रजित्तकह्योपंडितेरास॥ ८६॥
इति सुरमागुणः दोहा॥ वीर्यउस्मकदुतिक्तमनिदेहरसायनहोई॥ मुखअरुनेत्रविकारजि
तकहैकफघ्नसवकोई॥ ८७॥ इति उपधातरसोजनगुणः॥ अथ अन्नगुणकथनदोहा॥ स
ठीलाघवशीतकरउदरवद्धकरजास॥ वातपित्तकोशमनलघुयहगुणदेसुखदास॥ ८८॥
इति सेंढीचावलगुणः दोहा॥ मुडरुद्धकफपित्तहरलघुहिमग्राहीजान॥ अल्पनिलअरु

नयनवरणगुणजानहमान॥८८॥ इतिमृगगुणः दोहा॥ मोठरूक्षकफपित्तहरवृमनजीतकुमि-
 कारा॥ ज्वरनाशनयहपथ्यहैसदानिरोगीधार॥८९॥ इतिमोठगुणः दोहा॥ चणकशीतलघुहृ-
 क्षपुनिरक्तपित्तकफहारी॥ वातलविष्टेभीवहुपुरुषवीर्यकौवारि॥९०॥ इतिचणकगुणः दो-
 हा॥ शीतललघुग्राहीमसुरिकफपित्तलोहजीत॥ करैवर्णतक्षाकलघुयहगुणरायोचीत
 ८१॥ इतिमसुरीगुणः दोहा॥ कुलत्पउस्मलघुकृसनसरश्वासकफानिलहान॥ शुक्रअ-
 श्मरीस्वेदपुनियाहीगुल्मवधान॥८३॥ पीनसदृगग्रानाहहिकपित्तरक्तभनिछीन॥ कु-
 मिहरकहियैगुल्मविषमेत्ररोगकौहीन॥८४॥ इतिकुलत्पवनकुलत्पगुणः दोहा॥ मुद-
 दुपुनरूक्षलघुमाषपुष्टगुरुहोई॥ पापडगुनयहजानियैचतुरकहैसधकौई॥८५॥
 इतिपापडगुणः दोहा॥ प्रवलाजाअरुशालिधुनैमैगुणहैएह॥ लाघवदीपनहिमकह

तव हरि तृषा को देह ॥ ८६ ॥ मेह मेद कफ अस्र पित्त मल प्रद अल्प ज्ञान ॥ अती सार अहं
ह ॥ मेह रोग यद्मान ॥ ८७ ॥ इति लाजा गुणः दोहा ॥ शालिजा हिमकर मधुर लघु ॥ यो ही
हर हृदोग ॥ अनिल उष्ण अरु श्रम बहु तहरत कहत सव लोग ॥ ८८ ॥ मूर्च्छा क्लेश हर दाह
ज्वर पित्त रक्त अरु वाय ॥ हरै घर्म व्यायाम श्रम जल संयोग करिषाई ॥ ८९ ॥ इति सत्तु गुणः दो
हा ॥ कलप मंगगे हंम सरी होई लवण के संग ॥ सव मिलि हरै जु वाय को करै न कफ पित्त भं
ग ॥ ९० ॥ धान्य संग पंचकोल कृत दोष शमन करि मंड ॥ देह दाह मुख शोष हर ज्वर को शी
घ्र वहंड ॥ ९१ ॥ इति पंचकोल मंड संगुणः दोहा ॥ करहु यवा गुजल छगुण विरल द्रव संसि
द्ध ॥ चार चतुर्गुण भीच डीघन सिक्कि क कहै वृद्ध ॥ ९२ ॥ कहौ पेय जल चवद गुण मंड
चतुर्दश तोय ॥ करै कर्तता वैद्य यह गुरु लक्ष जानहि सोई ॥ ९३ ॥ हरै यवा गु अक्षि ज्वर

तस्माद्ग्राही जान॥ वसि विकारशोधन कहत यषगुन जानहुमान॥ ४॥ इति यवांगुगुणः दोहा
 संग्राही लघु दीपनी वल कर हृदय सुधारि॥ नेत्र रोग तर्पण तृषा ज्वर पप्य ब्रण हि विदा
 रि॥ ५॥ इति विलेपी गुणः दोहा॥ पेया ज्वर तृट् अक्षि गद अतीसार कहौ जान॥ जाहि पसीना
 दोष मल लघु रुचि भूष वयान॥ ६॥ लघ्यन्न पेयादिक भाण्यते॥ इति पेयादि गुणः दोहा॥
 मेडशीत दीपन लघव ग्राही सम करधात॥ श्लेष्मा अरु प्रम पित्त ज्वर मार्दव कर्ण विषा
 त॥ ७॥ इति मेडगुणः दोहा॥ त्वचामूल कफ लघु पृष्ण दल पंच अंग यह होई॥ शारवा अकु
 रसार पय अंग चीठ दश जोई॥ ८॥ इति दशंगः॥ अथ घृताधिकारः दोहा॥ इत्तममात्रा
 न न कर्षती न मध्य जान॥ दोई कर्ष घृत लघु कहौ मात्रा यह परवान॥ ९॥ अथ घृत
 घृत काल दोहा॥ न्याहा हर मात्रा वृहत्तम मध्य स मायाम॥ जाघन्य कहौ हे दोष हर स चै एह

घृतधाम॥१०॥ लघुभाजासुखकारिणी दीपनस्थ शरीर॥ अल्पदोषकौश्लेष्टहैकहैजुषे
हिलीर॥११॥ स्नेहनवेहणभ्रमहरनमध्यममात्राह॥ मृगीकुष्ठउन्मादग्रहविहरज्य
स्थलेह॥१२॥ इतिमात्रादोहा॥ केवलकहिघृतपित्तकौलवणायुक्तकहिवाय॥ अक्षिद्वारघृ
कफयुक्तघृतकरहुआहउपाय॥१३॥ विषयीदित्तक्षतरूक्षनरवातपित्तभनिरोग॥ हीनव
द्धिअरूस्मृतिघटघृतहैइनकौयोग॥१४॥ शीतकालमहिदिवसकहिउस्मकालभनि
रात॥ वातपित्तउद्रेकनिशिवातश्लेष्मदिनयात॥१५॥ उस्मवारिघृतऊपरैषूषकायोग
उदरशुद्धजलउस्मतेहरैविषमसवरोग॥१६॥



